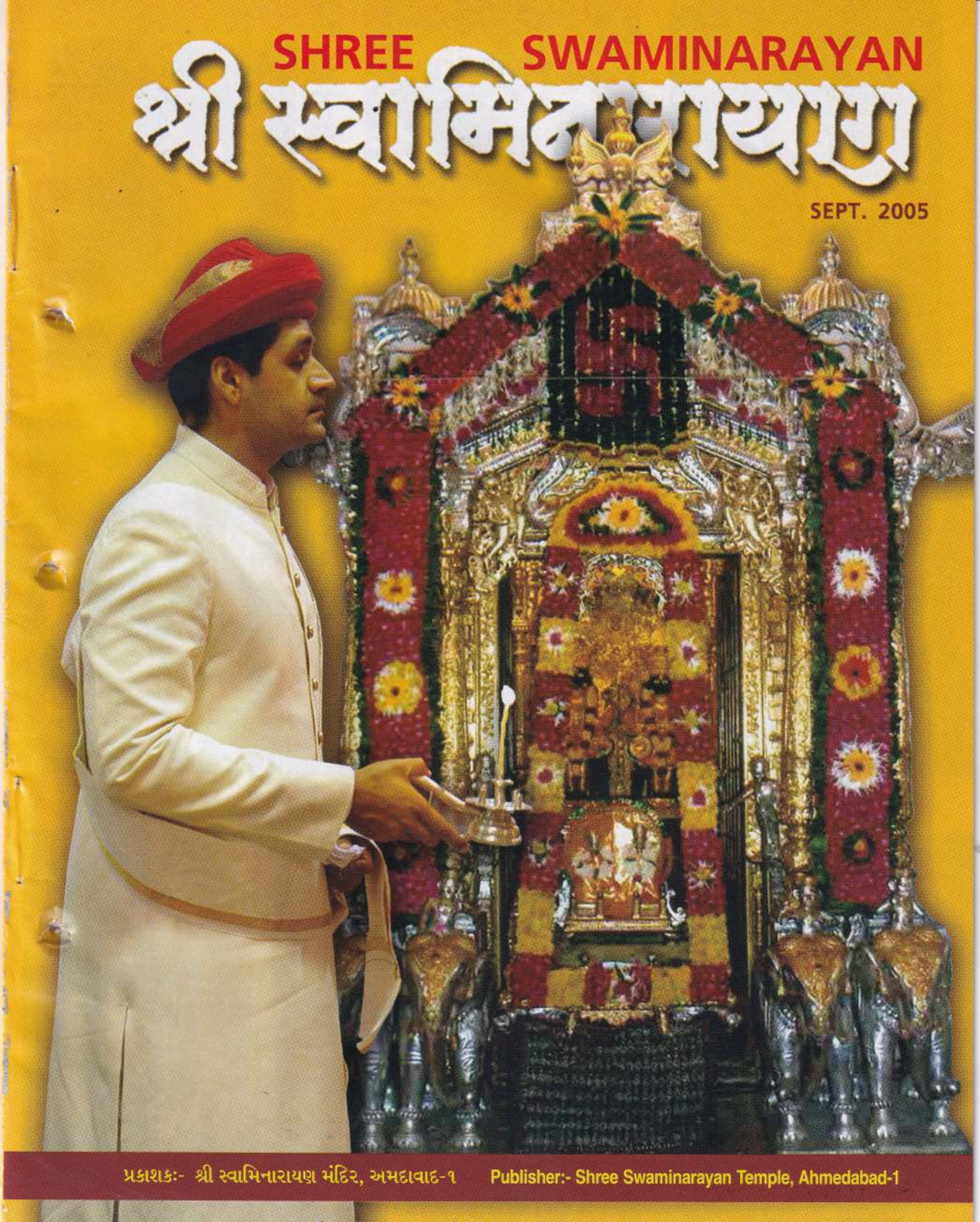
SHREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

SEPT. 2005



પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





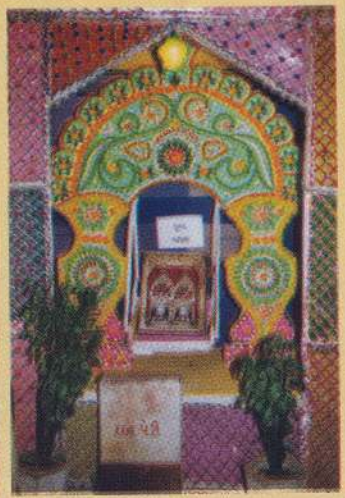
भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव का स्वतन्त्र दिन १५ अगस्त को त्रिरंगा से सुंदर श्रृंगार एवं हिंडोला दर्शन ।







जीवराजपार्क, धोलका तथा महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य हिंडोला दर्शन ।



जेतलपुर धाम मंदिर में भव्य जरी के हिंडोलो के दर्शन की विविध झलक । (संपूर्ण मास दर्शन का लाभ हुआ)

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ सितम्बर -२००५



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	प्रियतम वडनगर पधारे	४
४.	उत्कृष्ट गुरु भक्ति	५
५.	हमारे एसे भाग्य कहां ?	८
६.	तीर्थभूमि हालार भादरा के भूदेव	९
७.	जीवनमुक्त जीवुबा तथा लाडुबा की बुद्धिमत्ता	११
८.	सच्चा सुख सतसंग के अपनेपन में "ध्यान धरो धर्म के पुत्र का"	१२
९.	सत्संग सुरभि - मैं साथ मे हूँ तो चिंता किसकी ?	१४
१०.	गुरुः साक्षात् परब्रह्म	१६
११.	सत्संग समाचार	१८
	(१) उसे आसुरीजीव कहा जाता है	
	(२) भगवान के भक्त वंदनीय हैं ?	
१२.	प्रश्नपेटी	२०
१३.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

"कृष्णसेवा मुक्तिश्च गम्यताम् ।"

विशिष्टाद्वैत मत को स्वीकार किये हुए सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण का यह सिद्धान्त है । "कृष्णसेवा" का अर्थ है भगवान के दिव्य साकार स्वरूप की सेवा भक्ति, भगवान के माहात्म्य को समझकर, भगवान के स्वरूप को शास्त्र का स्वरूप जानकर प्रेम भाव से नवधा भक्ति से प्रभु पारायण होना ही भक्ति है ।

श्रवणं मननं विष्णोः
अर्चनं पाद सेवनं ।
वंदनं दास्यं सख्यं
सेव्यम् आत्मनिवेदनम् ॥

भगवान की कथा का श्रवण, वाचन, मनन, विविधोपचार से मानसी पूजा अथवा प्रत्यक्ष स्वरूप का पूजन, साष्टांग प्रणाम, हनुमानजी की तरह दासत्वभाव से, अर्जुन की तरह मित्रभाव से अम्बरीष राजा की तरह आत्मभाव से स्नेहप्रेम के साथ प्रभु परायण होना भक्ति है ।

वचनामृत के अनुसार मंदिरो का निर्माण उपासना की दृढता के लिये है ।

भगवान के स्वरूप का षोडशोपचार से पूजन, महाभिषेक, वस्त्र अलंकार, चंदन, पुष्प, तुलसी, महानैवेद्य, महानिराजन आरती, वंदन, प्रणाम, प्रदक्षिणा मंत्रजप उत्सव-महोत्सव कथा श्रवण आदि भगवान के प्रतिप्रेमभाव बढानेवाला भक्ति का एक प्रकार है ।

दिन-दिन बढने वाली ऐसी भक्ति भगवान के प्रति उत्तरोत्तर दृढ होती रहे, जिससे भगवान हम सभी के ऊपर खूब प्रसन्न हों ऐसी परमकृपालु श्री नरनारायणदेव महाप्रभु के चरण कमल में प्रार्थना ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अगस्त - २००५

१. ऊंझा श्री स्वामिनारायण मंदिर में हिंडोले के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण तथा हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।

३. जेतलपुर धाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में हीर के हिंडोले का दर्शन उद्घाटन अपने हाथों से किए ।

७. माणसा गाँव में डॉ. राकेशभाई गोस्वामी के वंसरी हार्ट एन्ड मेडिकल होस्पिटल के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण ।

८. घाटलोडिया (निलकंठ महादेव) अमदाबाद में श्री स्वामिनारायण मंदिर का खात पूजन अपने हाथों से किये ।

१०-११. धांगध्रा - नरसीपरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पारायण में पदार्पण ।

१२. अगस्त से १२ सितम्बर तक - स्ट्रेधाम (यु.के. I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव तथा वहाँ के अपने यु.के. मंदिर में पदार्पण सभा गुरु मंत्र वगैरह प्रसंग तथा अमेरिका में न्युजर्सी में कोलोनिया कें, नव निर्मित मंदिर में मूर्तिप्राण प्रतिष्ठा तथा (I.S.S.O.) के अन्य चेप्टरो के सत्संग सभाओं में पदार्पण ।

सभी सत्संगी को जरुरी सूचना

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्पष्टता पूर्वक अपने सभी आश्रितो को आज्ञा की है कि अपनी आमदनी का दशवाँ भाग अपने देश विभाग के आधार पर अपने देश विभाग के देव को अर्पण करना चाहिए ।

केवल संस्थायें, गुरुकुल या मंदिरो का निर्माण तथा किसी भी स्थान में दान करना हो तो धर्मादा में कमी करके दान नहीं देना चाहिए । अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के आश्रितोको श्री नरनारायणदेव के कोठार में ही अपना धर्मादा (रुपया, अनाज इत्यादि) जमा कर प्राप्ति रशीद जरुर से प्राप्त करले ।

सर्वावतारी श्रीहरि की इच्छा से अपना संप्रदाय देश विदेश में बहुत विस्तृत और व्यापक बनता जा रहा है । दाताओ को कई बार कहाँ दान देना है यह पता नही रहता इसलिए दान का प्रवाह दूसरी संस्था की तरफ मुड गया है । इसलिए दाताओ को सूचन है की दान के लिए योग्य मार्गदर्शन प.पू. आचार्य महाराजश्री के पास से प्राप्त कर योग्य जरुरत वाले मंदिर, संस्था, गुरुकुल इत्यादि को मिले ।

प्रियतम वडनगर पधारे

- शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी (श्री सहजानंद गुरुकुल वडनगर)

उत्तर गुजरात दंढाव्य देश में सुप्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ भूमि वडनगर में सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने अपने परम हंसो, पार्षदो काठी सवारों के साथ अनेकबार पधारे थे। और वडनगर की भूमि को पावन किये थे । वडनगर में अनेकलीला चरित्र करके तथा धर्मोपदेश द्वारा अधर्म का नाश करके भक्तों की रक्षा किये। जब-जब भगवान श्रीहरि दंढाव्य देश में पधारते तब वडनगर अवश्य पधारते और भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते । वडनगर में १४८ एकड़ शर्मिष्ठा सरोवर के किनारे श्रीहरि कई बार सभा भी करते तथा सरोवर में संत-पार्षद के साथ स्नान भी करते । महाप्रभु के आने पर वहाँ की भक्तजनता उत्सव मनाती और पूजन-आरती करती । वडनगर की प्रजा पर इतना प्रेम था कि उन के घरों में भोजन करते और उनके घरों को स्व चरणरज से पवित्र भी करते थे ।

एक समय श्रीहरि संत पार्षदो के साथ बामणवा गाँव से वडगर आये तब भक्तजनो ने खूब उत्सव किया था। उस समय गाँव के उत्तर में आम्र वृक्षों की घनी घटा देखकर तथा शर्मिष्ठा सरोवर के चारोतरफ के घाटों की सुन्दरता देखकर वहाँ रुके थे और खूब प्रशंसा किये थे । आज आप सभी इस सरोवर में स्नान कीजिए जिससे इसे बाँधने वाले को मोक्ष का मार्ग मिले ।

सभी का मोक्ष करना हमारा सिद्धान्त है । यह हमें बहुत अच्छा लगता है । ऐसी अनेकों सुंदर चर्चा कर ही रहे थे कि उसी समय श्रीहरि ने वाजावाला को कहा कि संतो की जब पंक्ति बैठे तब आप भी भोजन के लिए आजाना । इतना कहकर फूल का हार दिये शर्मिष्ठा सरोवर के पास श्रीहरि ने सभा किया । संतोने गरबी के पद गाया । श्रीहरि जब उसे गाते तो बडा आनंद आता था । रसोई तैयार हो गयी तो भोजन करके संत-पार्षदों को एक पंक्ति में बैठाकर भोजन कराया । ब्राह्मणोंने यह रसोई बनाई थी । ब्राह्मणो ने श्रीहरि की तथा संतो की पूजा की थी । हार पहनाकर संतो को एक-एक अगरबत्ती उन्हें भेट मेंदिया । संत नारायण की धुनि कर रहे थे । बाद में श्रीहरि पंक्ति में भोजन कर रहे संतो को घी से लथपथ लड्डू को परसने लगे। बीच में चोकवाली धर्मशाला को देखकर श्रीहरिने कहा कि, वडताल तथा श्रीनगर (अमदावाद) में ऐसी ही धर्मशाला बनाना है । इसमें कोई अंतर नहीं करना है । श्रीहरि तथा संत-पार्षद-भक्तजन सत्संग करके रात्रि में निवास स्थान आये ।

संत प्रातः शर्मिष्ठा सरोवर में स्नान करके श्रीहरि के साथ जलक्रीडा किये। श्रीहरि जब-जब वडनगर आये तब इस सरोवर में अवश्य स्नान किये हैं । रामानंद स्वामी भी इस सरोवर में स्नान किये हैं । रामानंद स्वामी के समय में जैसा सत्संग था आज भी वैसा ही सत्संग चल रहा है । वडनगर, विसनगर, प्रांतिज, मेऊ, नारदीपुर, कडी, श्रीनगर, वहेलाल, कणभा, गामडी, जेतलपुर, चलोडा, वीछींया, मछीआव, ददुका तथा देपणिया गाँव तक रामानंद स्वामी आये थे । उसी समय से यहाँ उनका सत्संग चल रहा है ।

श्रीहरि, संत, हरि भक्त सभी सरोवर में स्नान करके निवास स्थान पर आकर सभा किये । श्रीहरि चबूतरे पर गद्दी तकिया डलवाकर बैठे । वडनगरा नागर बडे गृहस्थ थे, उन्हें अपने बगल में बैठाये थे । सभी फूल के हार पहना रहे थे । ब्रह्ममुनिने "नित्य भजिये" इस स्वरचित पद को गाया । जिस पद में उपदेशात्मक भगवान की मूर्ति का माहात्म्य हो उसी पद को गवाते थे । रसोई देने वाले भक्त पूजा करने आये, पूजा करके स्वये की थाल रखकर, आरती स्तुति करके संतो की पूजा किये । पूजा हो जाने के बाद संध्या के समय आरती करके सभी एक दूसरे के पैर छूकर सभी बैठ गये । उस समय विद्वान विप्र के विषय में श्रीहरि कहने लगे कि आप बुद्धिमान है । आप कुछ पूछिये, जिस पर चर्चा हो, हमें प्रातः-

यहाँ से प्रस्थान करना है । तब विद्वानों ने बोला कि प्रभु ? आप

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ७

उत्कृष्ट गुरु भक्ति

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण श्री स्वामिनारायण भगवान ने जिसे सत्संग की मा कहे थे - ऐसे मुक्तानंद स्वामी द्वारा रचित "मुक्तानंद काव्य" नामक ग्रन्थ में "सत्संग शिरोमणी:" प्रकरण में आपोदधौम्य नाम के मुनिवर के तीन शिष्यों की उत्कृष्ट गुरु भक्ति को काव्य शैली में लिखा है। जो सत्संगी मात्र के लिए जीवन में उतारने लायक है। यहाँ उसी को गद्य में स्यांतर करके लिख रहा हूँ।

स्वामिनारायण भगवान मुकुन्द ब्रह्मचारी को कहते हैं। गुरुतथा संत को देव मानकर जो सेवा नहीं करते वे देह बुद्धि लाकर अवगुण लेते हैं। स्वयं को व्यवहार में गुणवाला मानते हैं। जो अभिमानी होता है उस का पतन हो जाता है। जिसे श्रद्धा न हो ऐसे रोगी को पंचामृत पान कराया जाय तो लाभ के बदले हानि करता है। जो संत को ब्रह्म मानते हैं उनमें दोष बुद्धि नहीं आती। वह व्यक्ति आर्सणि तथा उपमन्यु की तरह भगवान का तथा गुरु का अति कृपा पात्र होता है। प्रभु के ऐसे वचन सुनकर मुकुन्दवर्णी भगवान के चरण में गिरकर पूछते हैं। हे महाराज ! आर्सणि, उपमन्यु किस प्रकार गुरुभक्ति किये। उनके ऊपर गुरु किस प्रकार प्रसन्न हुए। हमें दीन जानकर यह कथा सुनाइए।

मुकुंदवर्णी की इस विनय युक्त वाणी सुनकर श्रीहरि उस कथा को कहते हैं। आपोद धौम्य नाम के गुरु के पास तीन शिष्य थे। आर्सणि, उपमन्यु तथा वेद। तीनों शिष्यों की भक्ति ग्रंथो में क्रम से निर्सपित की गयी है। तीनों का लेख बडा न हो इस लिये एक केवल उपमन्यु की कथा का दृष्टांत यहाँ दे रहे हैं। जिससे तीनों का अनुमान किया जा सकता है।

सार-असार को जानने वाला तथा निर्मल बुद्धिवाला ऐसा उपमन्यु नामक शिष्य को गुरुजी ने आज्ञा की तुम्हे गायो की सेवा करनी है। शिष्य गुरुकी आज्ञा देवाज्ञा मानकर सेवा प्रारंभ की। गायों की सेवा करने लगा। दिन में गायों को चराने जाता और साम को वापस आकर गुरु के चरणों में शीश नवाता। शिष्य का स्वस्थ शरीर देखकर गुस्ने पूछा कि शिष्य। तूं अपने शरीर को कैसे पुष्ट रखता है ?

शिष्य: भीक्षा वृत्ति के आधार पर जीवन का निर्वाह करता हूँ। हे गुरुजी आपके वचन में मुझे बहुत प्रेम है।

गुरु: मुझे विना भिक्षा दिये तुम्हे ग्रहण करना योग्य नहीं है। शिष्य गुरुकी आज्ञा को मस्तक पर चढा कर, भिक्षा मांगकर गुरु को अर्पित करने लगा। गुरु भिक्षा अन्न सभी लेलेते थे। शिष्य को नहीं देते थे। फिर भी शिष्य गुरुके अवगुण नहीं लेता था। सम्पूर्ण दिन जंगल में गायों को चराता रहता था। साम को वापस आकर रोज की तरह गुरु को नत मस्तक प्रणाम करके अपनी क्रिया सम्पन्न करता। फिर भी शरीर को पुष्ट देखकर गुरु ने पूछा -

गुरु: तुम्हारे पास जो भी भिक्षा आती है वह सब हम ले लेते हैं, फिर भी तुम्हारी शरीर कैसे पुष्ट है ?

शिष्य: हे गुस्देव ! प्रथमवार जो भीक्षा में आता है वह सम्पूर्ण आपको दे देता हूँ। दूसरीबार की जो भीक्षा मांग कर लाता हूँ वह हम अपनी शरीर के उपयोग में लेते है इस प्रकार मेरी शरीर का निर्वाह होता हैं।

गुरु: तुम्हारे लिए यह योग्य नहीं है। लोभ के कारण तुम दो बार भिक्षा मांगकर दूसरे भिक्षुक की वृत्ति को तोडता है। बडे प्रेम से गुरुके वचन को स्वीकार करके गायों को चराने लगा। साम ढलते जब आश्रम में आया तो रोज ती तरह प्रणाम करके पास में बैठा। पुन: उसकी पुष्ट शरीर देखकर गुरु ने पूछा।

गुरु: हे उपमन्यु ? जो तुम भिक्षा मांगक र अब लाता है उसे हमें दे देता है, दूसरी बार मांगने के लिए मनाकर दिया हूँ, फिरभी तुम्हारी शरीर कैसे पुष्ट है।

शिष्य: गाय के दूध से शरीर का पोषण करता हूँ।

गुरु: दूध पीने की आज्ञा तो मैने नहीं किया है। गुरुकी आज्ञा शिरोधार्य करके गायों को चराने जाता है। रोज की तरह साम को आकर वंदन करके पास बैठता है। शिष्य की पुष्ट शरीर देखकर गुस्मुन: पूछते हैं ?

गुरु: मेरी आज्ञा से जैसे तुमने भिक्षा अन्न छोड दिया वैसे दूध भी छोड़ दिया, अब तुम्हारे जीवन निर्वाह की वृत्ति क्या है।

शिष्य: गाय का दूध जब बच्चा पीता है उस से जो फेन होता है वही जमीन पर गिर जाता है उसी से जीवन का निर्वाह करता हूँ। दूसरा पोषण नहीं है।

गुरु: बछडा बहुत कृपालु कहा

जायेगा तुम्हारे लिए अधिक फेन निकालता है। यह भी बछड़े की वृत्ति का अवरोध कहा जायेगा, यह भी तुम्हारे लिए योग्य नहीं है।

बाद में शिष्य फेन का पान करना भी बन्द कर दिया। श्रद्धा प्रेम से गायों को चराने लगा। फिर भी अपने गुरुका अवगुण नहीं लिया। जब खूब भूख से पीडित हुआ तो वन में मदार के पत्ते का भक्षण करके बुभुक्षा शांत किया। तीक्ष्ण क्षार युक्त मदार के जहर से जठर में अग्नि उद्दीप्त हो गयी, दुःखदायक पीडा होने लगी, तत्काल वह शिष्य आंख से अंधा हो गया। अंधा होकर भी गाय चराने लगा। परिणाम स्वस्म वह कूंप में गिरगया सायंकाल हो गयी लेकिन उपमन्यु वन में से वापस नहीं आया। तब गुरुजीने दूसरे शिष्य को शुभ वाणी कहने लगे। उपमन्यु किस कारण से अभी तक नहीं आया लगता है - उसके जीवन निर्वाह की सभी वृत्ति मैने तोडदी जिससे वह को पायमान हो गया है, उसकी खोज करनी पडेगी। इतना कहकर गुरुजी दूसरे शिष्य को साथ लेकर वन की तरफ चल दिये और जोरों की आवाज लगाने लगे "मेरे पुत्र उपमन्यु तुम कहाँ हो" ? गुरु के वचन सुनकर शिष्य कूएं में से जोरों की आवाज लगाता है हे गुस्देव मैं कूएं में गिर गया हूँ। हे कृपालु मुझे आप दर्शन दीजिए। तब गुरुजी कुएं के नजदीक जाकर कहते है, हे ज्ञानी मुनि तुम कैसे कूएं में गिर गया ?

शिष्यः मैने मदार के पत्ते से बुभुक्षा शांत करना चाहा जिससे मेरी आंख चली गयी और मैं कूएं में गिर गया। तब गुरुजी कूएं में से बाहर निकाल कर सुखद उपाय बताते हैं।

गुरु देवों के वैद्य अश्विनीकुमारों की स्तुति कर, वे ही तुम्हारी आंखो को ठीक करके पहले जैसी कर देंगे। गुरुका वचन सुनकर शिष्य अश्विनीकुमारों का स्तवन किया। अश्विनी कुमारों ने दर्शन देकर कहा हम यह अमृत लाये है इसका तूं पान करले। तब उपमन्यु ने कहा गुरुजी को विना अर्पित किये हम इस अमृत का पान नहीं कर सकते हैं। तब अश्विनी कुमारों ने कहा - हे निर्मानी विप्र श्रेष्ठ तुम सुनो ? जब तुम्हारे गुरुजीने प्रथम स्तवन किया था तब भी वे अपने गुरु को विना दिये ही खा लिए थे। हे तात ! तूं भी वैसा ही कर। इस श्रेष्ठ औषधि का पान करले।

उपमन्युः हे देवो ! गुरुजी को अर्पण किये विना यह आपकी अमृत औषधि जहर जैसी लग रही है।

आश्विन कुमार तुम्हारी गुरु भक्ति से हम अत्यन्तं प्रसन्न हुए है गुरु के साथ तुम्हारा भी सभी मनोरथ पूर्ण हुआ। आप तथा आप के गुरुजी दोनो के दांत वज्र के हो जांय। आप दोनो का कल्याण हो। आप जगत में गुरु भक्त के स्म में प्रसिद्ध बनो। आप को सद्यः चक्षु का लाभ मिले।

अश्विनी कुमारों से वरदान प्राप्त करके उपमन्यु अपने गुरु के निवास स्थान पर आकर गुरु की वन्दना की। उसी समय गुरुजीने भी प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया की अश्विनीकुमार के वरदान अनुसार आपका श्रेय हो। सूर्य के प्रकाश की तरह तुम्हारे हृदय में वेद-धर्म शास्त्रों का प्रकाश रहे। गुरु भक्ति से उपमन्यु परम सिद्ध हो गया। भगवान तथा गुरु की कृपा का पात्र बना।

अन्य दोनो शिष्य भी गुरुकी आज्ञा का पालन करके, उनकी प्रसन्नता प्राप्त करके, परमकल्याण कारिणी विद्याको प्राप्त करके, भगवान की प्रसन्नता प्राप्त करके जगत विश्रुत हुए थे।

जिसके इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण हों उन्हीं की परंपरा में त्यागी-गृही सभी के गुरु धर्मवंशी आचार्य है। जिसे स्वयं भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं दे दिया। जिसके लाखों शिष्य हैं। गुरु मात्र दो हैं। अहमदाबाद गद्दी पर विराजमान प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा वडताल गादी पर विराजमान प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री हैं।

श्रीजी महाराज कहते हैं -

अमे एमां ए छे अममांई रे।
एम समजो सहु बाई भाई रे॥
एथी अडगा न रहिए रे।
एमा रहीने दर्शन दई रे॥

प.पू. आचार्य महाराजश्री श्रीजी महाराज के अपर स्वस्म हैं। अपर अर्थात् पर नहीं अर्थात् प्रत्यक्ष। अपने गुरुजी हमें तो गाय चराने नहीं भेंजते, खेती करने को नहीं कहते, इनकी व्यक्तिगत कोई सेवा तो रहती नहीं हैं। केवल इतना ही कहते हैं कि शिक्षापत्री की आज्ञा में रहकर श्रीजी महाराज का भजन करो। सत्संग करो, अन्य मुमुक्षुजन को सत्संग कराओ। हमारी लाखों की संख्या होने से हमें कभी भी व्यक्तिगत आज्ञा नहीं किये। परंतु सभा में आप के मुख से निकलती वाणी सभी को स्वीकार करलेनी चाहिए। उनकी आज्ञा पालने से श्रीजी महाराज प्रसन्न होजाते है। अपने

भगवान तथा गुरु दोनो प्रसन्न हो तो बाकी क्या रहता है । अपना मनुष्यदेह धन्य हो जाय ।

जैसे सत्संगी में स्वामिनारायण भगवान में इष्ट बुद्धि है, ऐसे सत्संगी मात्र में धर्मवंशी आचार्य में आर्षण, उपमन्यु, वेंद जैसी उत्कृष्ट भक्ति हो, स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्थापित होने गादी के प्रति निष्ठा हो, तो श्रीजी महाराज प्रसन्न हो गए ऐसा मानना चाहिए । जगत के लोग गुरु की शोध कर रहे हैं । जबकि हमें अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवानने गुरुको शोध कर ही दिया है । इनकी महिमा समझ में आ जाय तो गुरुपूर्णिमा के दिन अहमदाबाद - वडताल मंदिर के सभा मंडप में सत्संगी समा नहीं सकते । मंदिर के बाहर लाइन लग जायेगी । तब मीडिया वालों को भी कहना नही पडे ये लाल पगडीवाले स्वामिनारायण सम्प्रदाय के गुरुहैं । यथार्थतः अपने गुरु की महिमा समझने के लिए प्रतिदिन तो नही, लेकिन महीने में एकबार निष्कुलानंद काव्य में से पुरुषोत्तम प्रकाश का पाठ करना चाहिए ।

आज त्यागी गृही दोनो के लिए सत्संग की गद्दी पर विराजमान धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री में गुरुका भाव आवे तो सत्संग के सभी प्रसंग अपने हल हो जाय । गुरुमंत्र जिसे देने का अधिकार हो, वही अपना गुरुहैं । शिक्षापत्री में भी बहुत सारे श्लोकों में अपने आचार्य को ही सत्संग मात्र का गुरुबताया गया है । व्यक्तिगत शिक्षागुरु के रूप में भी हो सकते है । किसी संत में भी यह भावना की जासकती है । परंतु जगत का कोई व्यक्ति पूछे आप का गुरुकौन ? तो तुरंत ही आप कहेंगे कि अपने देश के वर्तमान जो पीठाधिपति हो उनका नाम लेगें, यदि ऐसा नहीं तो यह कमी कही जायेगी । जब अपने गुरुने कृष्ण के अष्टाक्षर मंत्र का उपदेश किया तभी तो भगवान की भजन का अधिकार मिला । तभी से हमें सत्संगी की संज्ञा मिली । हमारे गुरुअपने मुख से अपनी गुरुता कीमहिमा तो कह सकते नहीं वे केवल श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित देव तथा संतो की महिमा कह सकते हैं । परंतु संत-हरिभक्तो को चाहिए कि महाराज की महिमा के साथ गुरुकी महिमा का गुणगान जब प्रसंग आवे तब अवश्य करें ।

प्रियतम वडनगर पधारे

पृष्ठ ४ से आगे

समर्थ हैं । आप के पास प्रातः से सम्पूर्ण नगरजन सेवा में उपस्थित हैं, क्योंकि आपके भीतर गुरुका सामार्थ्य है । यहाँ हमारा आने का मन नही था । लेकिन आपके आने का सुनकर खिंचाव हुआ और हम सभी आ गये । आपके हाथ में हम सभी की जीवनडोरी है ऐसा लगता है । आजतक हम सत्संग का बहुत द्रोह किये हैं । आपके संत सभी अपने धर्मपर चलते हैं । शास्त्र में अभक्ष्य वस्तुओं की निंदा आप करते हैं । उसी का हम प्रतिपादन करते । आप उन्हीं ब्राह्मणों को यज्ञ में भाग दिये और भोजन करवाये । इस प्रकार अपने धन का उपयोग किया है । ऐसा सभी प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है । अभी जो बुद्धि है बाद में भी बनी रहे ऐसी उपाय कीजिए । तब श्रीजी महाराज ने कहा जब तक जीव को मोक्ष की चाहना न हो तब तक विभ्रांत बन कर इधर-उधर भटकता रहता है । गुलाब की बाग में बैठे तब तक उसकी सुगंध आती है । दुर्गंध की जगह पर बैठे तब दुर्गन्ध की बू आवे । जैसा खाये वैसी उडकार आती है । खाने पीने की असर तो होती है । संत विना भगवान की पहचान संभव नहीं । सभा में बैठे हुए विद्वान श्रीहरि की बात सुनकर आश्चर्य युक्त हो गये और बोले कि आप ही भगवान है । यह बात आज ही हम समझ सके हैं । हम सभी के पामर जीव का उद्धार करने ही आप यहाँ पधारे हैं ।

शास्त्र में कहा गया है कि सच्चे गुरु के मिलने पर ही सच्चा ज्ञान सम्भव है ।

प्रिय सज्जनो ! वडनगर में श्रीहरि के मुख से अमृतवाणी सुनकर मुमुक्षु ब्राह्मणो ने सच्चे गुरु ऐसे भगवान श्रीहरि की शरणागति स्वीकार करके धन्यता का अनुभव किया । इसी प्रकार हमें उन्ही के वंशज अपने धर्माचार्य श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री गुरु के रूप में प्राप्त हुए हैं । इन्हीं की शरणागति स्वीकार करके धन्यता का अनुभव करना ही सच्चा सुख तथा इसी में श्रीहरि की प्रसन्नता है । (श्रीहरिचरित्रामृत सागर ग्रंथ के आधार पर)

हमारे ऐसे भाग्य कहां ?

- जयदीप एच. पटेल (विराटनगर, अमदावाद)

एकबार महाराज एक गांव में पधारे थे । गांव के काठी दरबार के यहां उतारा किये थे । सभी लोग वहां दर्शनार्थ जाते थे । उसमें एक गरीब किसान । किसान और उसकी पत्नी कावलबाई दोनो बडे भावुक । महाराज के दर्शन करते थकते नहीं थे। दर्शन करते हुए सोचते थे, महाराज हम गरीब के घर में पधारेंगे या नहीं ? महाराज हमारा आँगन पावन करे तो ! आहाहा ! हमारे ऐसे भाग्य कहां ? किसान तो बहुत खुश हो गया । और दूसरे दिन सुबह तो महाराज भक्त मंडली के साथ घर पूछते- पूछते उस गरीब किसान के घर आंगन में खडे हुए । किसान तो आकुल - व्याकुल हो गया । घर में तो अंधेरा था । बरामदे में थोडा उजाला था । किसान ने जल्दी से खटिया गिरा कर गद्दा बिछा दिया और महाराज को विराजमान किया । महाराज धीरे - धीरे मुस्कुराये और कहां, "यह गादी मुझे पसंद आयी !"

किसान की पत्नी रसोई में से कटोरे में दूध भर कर लायी और महाराज के समक्ष रखा । महाराज पीते हुए बोले, "वाह, क्या सुंदर दूध है ! उसमें शक्कर डाली है क्या ? किसान की पत्नी की खुशी का ठिकाना नही है । वह बोली : "घरकी भैंसका दूध है, महाराज ! कितना ध्यान रखती हूं, फिर दूध ऐसा ही होगा ? महाराज ने कहा : 'तो एक दूसरा कटोरा भर दो' महाराज दूसरा कटोरा भी पी गए, और मांग कर तीसरा कटोरा भी लेकर पी गए । दूध खत्म हो गया ! किसान ने पत्नी को कहा : "वाह आज महाराज ने हमे निहाल कर दिया । इतनी सारी भगवान की कृपा हम रखेंगे कहां ? आंगन में पधारे भक्त मंडली का सत्कार भी करना चाहिए । दूध नहीं है, लेकिन छाश तो है न ? छाश का पूरा बरतन रसोई में भरा हुआ है । भक्तो को छाश दूं, ऐसा विचार कर किसान की पत्नी रसोई में छाश लेने गई । तब पता चला कि वह छाश का बरतन नहीं था लेकिन दूध का था । और छाश तो महाराज पी गए थे । यह देखकर किसान की पत्नी के अफसोस का कोई ठिकाना न रहा । उसने दोनो हाथों से अपने दोनों गाल पर तमाचा लगा दिया । फिर महाराज के पास आ कर रोते हुए बोली : " महाराज मेरी गलती हो गई, मुझे माफ करो । मैंने दूध की जगह आपको छाश दे दी है । दूध तो अब भी वैसा ही पडा है । महाराज, आप मुझे माफ कीजिऐ !" महाराज हंसकर बोले : अभी जब आप बता रही है तब हमे पता चला की छाश थी । बाकी हमे तो वह दूध लगा था । दूध से भी मीठा !"

ऐसे थे महाराज ! वे भक्त के भाव को देखते थे । इन्सान गरीब है की अमीर, काना है की राजा ये नही देखते थे । भक्त के दिल का भाव देखकर बगैर निमंत्रण के उसके घर जा कर खडे रहते । उनको घर पधारा हुआ देख कर भक्त का हृदय खुश हो जाता था । इस प्रकार भक्त को देख कर भगवान का हृदय भी नाच उठता था । महा भारत में कथा है की श्री कृष्ण दुर्योधन का राजभवन छोड कर गरीब विदुर की झोंपडीमें जा रहे थे, और उस वक्त विदुर पत्नी खुश हो गयीथी की उन्हो ने भगवान को केले का छिल्का खिला दिया था, और गर्भ (केला) फेंक दिया था । भगवान भी खुशी - शुशी छिल्का खा गए थे । यहां भी ऐसा ही हुआ था न ! किसान की पत्नी ने दूध समझ कर छाश दी और महाराज ने छाश पी कर दूधकी ढेकार ली ।

एसे थे महाराज ! भाव के भूखे ! भावना भी वहुत थी ! किसान के घर पधार कर महाराज ने भावपूर्वक छाश पी और भक्त मंडलको दूध दिया ।

किसान और किसान की पत्नी

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १०

तीर्थभूमि हालार भादरा के भूदेव

- मोतीलाल वेचरभाई चौहाण (माणामोरा-हालार)

तीर्थभूमि हालार जामनगर समुद्र के किनारे का प्रदेश कहा जाता है । यह भूमि हालार क्यों कही जाती है ? यह स्वाभाविक प्रश्न है । सत्य की जानकारी न हो तो जो इतिहास कहता हो वही सत्य है ।

जामनगर के धुवाव नामक गाँव में विश्वम्भर भट्ट नाम के ब्रह्म निष्ठ एक ब्राह्मण रहते थे । उन्होंने गोपनाथ में गोपालनाथ ब्रह्मचारी के पास भागवती दीक्षा लेकर आत्मानंदनाम से प्रसिद्ध हुए और सत्संग प्रचारार्थ हालार देश में आये । आत्मानन्दजी के कितने शिष्य जामनगर जिला के ध्रोल तहसील से केवल १६ कि.मी. दूर लतीपुर गाँव में रहते थे । स्वामीश्री वहाँ यदा कदा आते रहते । इस लतीपुर गाँव में ब्राह्मण परिवार में वल्लभजीजानी नाम के पवित्र ब्राह्मण रहते थे । जिसका वशिष्ट गोत्र माध्यन्दिनी शाखा तथा तीन प्रवर था । सांसारिक होते हुए भी संतान सुख नहीं था । गुरु वर्य आत्मानंदजी के कहने से गुरु के वचन में श्रद्धा होने से श्रावण मास पर्यन्त सोमनाथ महादेव में अर्चन-पूजन-अभिषेक इत्यादि भाव पूर्वक करके देवाधिदेव महादेव की प्रसन्नता प्राप्त करके वरदान प्राप्त किये, परिणाम स्वस्प संवत १८०६ में वल्लभजी जानी के घर में पुत्र का झूला बंध गया और संतान सुख प्राप्त हुआ । भोलानाथ की कृपा से संतान प्राप्ति हुए जिससे पुत्र का नाम भोलानाथ रखा । पुत्र की यज्ञोपवीत संस्कार विधि संवत १८१४ में हुई । इस प्रसंग पर स्वामी आत्मानंदजी लतीपुर गाँव में आये । उस समय स्वामी को विनंती किये कि मुझे नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहकर यावत् जीवन विद्याभ्यास करना है । लेकिन दीर्घदृष्टि वाले गुरुजीने गृहस्थाश्रम में रहने की आज्ञा कर दी । और कहाकि आपके घर में अद्वितीय तथा भगवत् भक्त संतान होगी । जो सनातन धर्म की ध्वजा को चारो दिशाओं में फहरायेगी ।

गुस्वर्य आत्मानंद स्वामी के वचन सुनकर दूसरे पांच शिष्यो ने गुरु से आशीर्वाद प्राप्ति की प्रथना की । तब गुरु आत्मानंदने उन शिष्यों से कहा कि तुम्हारे पुत्र भी पुरुषोत्तम नारायण के परम भक्त होंगे । उनमें से लतीपुर गाँव के श्री सुखदेव नामक ब्राह्मण ने कहा कि गुस्देव ! मैं तो पुत्र हीन हूँ, मुझे एक पुत्री है उसे आशीर्वाद दीजिए । उसी पुत्री के लिए आशीर्वाद देते हुए गुस्ने कहा कि भोलानाथ को जो मैंने आशीर्वाद दिये हैं वही इसे दे रहे है, परिणाम स्वस्प दोनो का परिणय हो गया । सुखदेव दवे भोलानाथ के सशुर तथा संप्रदाय के शिरोमणि स. स्वामी गुणातीतानंदजी के गृहस्थाश्रम के नाना हुए ।

लतीपुर के अज्ञानी लोग भगवद् भक्तों को पीड़ा देने लगे । स्वामी आत्मानंदजी की आज्ञा से वे पांच शिष्य लतीपुर गाँव को छोड़ने का निश्चय कर लिए ।

वल्लभजीजानी तथा रामभाई सुथार भादरा में रहने लगे । रामजीभाई सुथार शेखपाट में रहने लगे । सुखदेव दवे तथा हरीभाई कालावड में चले गये । नानदास पटेल गुजरात की तरफ चले गये ।

आत्मानंद स्वामी के वरदान अनुसार नानदास पटेल को दो पुत्र हुए जो संसार से विरक्त हो गये । जिनका नाम योगानंद स्वामी तथा भगवदानंद स्वामी के नाम से संप्रदाय में प्रसिद्ध हुए । शेखपाट में रहते रामभाई सुथार के पुत्र लालजीने तो कितनी काव्य रचना करके स्वनाम को चरितार्थ किया । मागाभाई सुथार का नाम भी हम जानते हैं जो भगवान के महा भक्तों में अपना नाम स्थान प्राप्त किये थे । भूदेव भोलानाथ का परिणय सुखदेव की पुत्री सांकणबाई के साथ कोलावाड में सं. १८२२ में हुआ । इसी समय आत्मानंद स्वामी वहाँ पधारे हुए थे । विवाह सम्पन्न होने के बाद भोलानाथ तथा साकरबाई दोने दंपती आत्मानंद स्वामी का आशीर्वाद लिये । उस

समय स्वामीने दो पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया । और कहा कि आप के घर पुरुषोत्तम नारायण पधारेंगे। ऐसा हार्दिक आशीर्वाद सुनकर नव दंपति भाव विभोर हो गये । परंतु भोलानाथ के १५ वर्ष विवाह के बाद संतान सुख नही रहा। संवत १८३७ में चैत्र मास में भादरा गाँव के लोग श्राद्ध करने के निमित्त प्रभास क्षेत्र जा रहे थे । उस समय वाहन व्यवहार नहीं था । चलकर जाना था । रात्रि निवास मोरवाटिया गाँव में किये । दूसरे दिन रामनवमी थी, अतः रात्रि में भक्तों के साथ कीर्तन करके विश्राम किये ।

इधर साकरबाई को रात्रि में स्वप्न हुआ कि संखक्षेत्र में अक्षराधिपति पुरुषोत्तम नारायण जन्म धारण करेंगे। अर्थात् इसके लिये प्रयाश करने की जरुरत नहीं है। इस स्वप्न में आत्मानंद स्वामी आशीर्वाद दिये । सं. १८४१ के आश्विन शुक्ल पूनम मंगलवार के दिन सांकरबाई को पुत्र रत्न हुआ । उस समय स्वामिनारायण संप्रदाय के उद्धवजी जाने जाते हुए रामानंद स्वामी के गुरु आत्मानंद स्वामी थे। स्वामीने रामानंद स्वामी को अपने स्थान पर नियुक्त किये थे संयोग वश स्वामी उस समय शेकपाट गाँव में आये हुए थे । भोलानाथ के यहाँ पुत्र रत्न पैदा हुआ है यह सुनकर खूब आनन्दित हुए । स्वामी भोलानाथ को बुलाकर कहे कि इसका नाम मूलजी होगा । और आशीर्वाद दिया कि यह आपका पुत्र वृहस्पति के समान महान वक्ता होगा तथा अनन्त जीवों का कल्याण करेगा ।

श्री रामानंद स्वामी के अक्षरनिवासी होने के बाद श्रीजी स्वामीने धर्मधुरा सम्हाली और थोडे समय के बाद स्वामी भादरा पधारे । वहाँ एक मास पर्यन्त निवास किये । जहाँ पर आत्मानंद स्वमी के आशीर्वाद से साकरबाई के हाथ बनाई हुई रसोई का प्रसाद ग्रहण किया ।

कुछ समय बीत जाने के बाद मूलजीभाईने संसार छोड़कर अपने जन्म के हेतु को सिद्ध करने के लिए सं. १८६६ में डभाण के यज्ञ में श्रीजी महाराज से महादीक्षा लेकर गुणातीतानंद स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए । श्रीजी महाराज ने जूनागढ में गुणातीतानंद स्वामी की नियुक्ति महंत के रुप में की थी । जो सेवा यथार्थ रुप से ४० वर्ष ४ मास ४ दिन तक किये । स.गु. गुणातीतानंद स्वामीने श्रीजी महाराज की उपासना का परम रहस्य सत्संग समाज में विखेरा । वे कहते जिसे भगवान के धाम में जाना है वे श्रीजी महाराज की आज्ञा में वर्तन करें । गोंडल गाँव में १९२३ आश्विन शुक्ल ९ के दिन पधारे खूब धूमधाम से उत्सव किये । श्रीजी महाराज की लीला चरित्रों की कथा किये । उस समय गोंडल नरेश ने कहा हि हमारा मोक्ष हो ऐसा उपाय बताइए । उस समय स्वामी ने कहा कि संतो के साहचर्य से श्रीजी महाराज की एकनिष्ठा भक्ति करने से अवश्य आपको मोक्ष की प्राप्ति होगी । संवत १८२३ में आश्विन शुक्ल १२ गुरुवार की रात्रि में १२-४५ को गोंडल गाँव में श्रीजी महाराज उन्हें लेने आये ।

ब्रह्म संहिता स्वामी की वातो वि. ग्रंथ के आधार पर यह संक्षिप्त लेख तैयार किया हूँ । विशेष ज्ञान संप्रदाय के ग्रंथो में देखने को मिलता है । इस लेख में कुछ भूल हुई हो तो वाचक मित्र अवश्य क्षमा करेंगे ।

पृष्ठ ८ से आगे

हमारे एसे भाग्य कहां ?

बोली : "वाह महाराज हमारा आंगन पावन किया ! अहोहो ! हमारे ऐसे भाग्य कहां से ?"

प्यारे हरिभक्तो ! यहां जरा ध्यान से दृष्टिपात करकर देखो, महाराज अपने तयालु स्वभाव का कैसे दर्शन कराते है और कहते है कि "अभी आप बता रहे है तब हमे पता चला की छाश थी । बाकी हमे तो दूध ही लगा था । दूध से भी ज्यादा मीठा ! महाराज को भी अपने भक्त के प्रति कितना भाव रहता है । और ऐसे अति दयालु स्वभाव औरअंतर्यामी भगवान के दर्शन हमे अभी स्वामिनारायण भगवानमें अर्थात् अपने प.पू. बापजी (निवृत्त आचार्य) तथा वर्तमान प.पू. आचार्य श्री में होते है । उसमे कुछ और लिखने की जरुरत नहीं है । दर्शन स्मरण मात्र से समझमें आ जाता है ।

जीवनमुक्त जीवुबा तथा लाडुबा की बुद्धिमत्ता

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

गढडा पंथक में 'एभल खाचर' का प्रख्यात दरबार गीना जाता था। उनके पुत्र का नाम उत्तमकुमार। ये उत्तमकुमार सहजानंद स्वामी के संपर्क में आने के पश्चात दादा खाचर के नाम से पहचाने जाने लगे। एभल खाचर को जीवुबा और लाडुबा नामकी दो परमज्ञानी पुत्री थी। श्रीजी महाराज जहां विराजते वहां दादा खाचर के पिताश्री एभल खाचर दर्शनार्थ जाते, और घर आ कर सभी को महाराज की अमृतवाणी सुनाते।

श्रीजी महाराज कारियाणि बीराजमान है, इस लिए हम सभी सपरिवार भगवानके दर्शन करने की बात एभल खाचर ने की। तभी यह शुभ समाचार सुन कर सभी के आनंद की कोई सीमा न रही। एभल खाचर सहपरिवार करियाणी आये। तभी सभा में मांचाखाचर ने खडे हो कर एभल खाचर का परिचय देने लगे। उस वक्त महाराज ने धीरे - धीरे हंसते हुए कहा : "अरे ! मैं तो एभलखाचर को उनके जन्म से पहले से पहचानता हूं।"

महाराज का यह शब्द सुनकर जीवुबा और लाडुबा आश्चर्य में डूब गई ! नेत्र से महाराज को देख करे उनकी मूर्ति हृदय में उतारने लगीं। दोनो बहनों को समझ में आ गया की, महाराज एक अवतारी विभूति है। तभी से दोनो बहनो के हृदय में दृढ वैराग्य का बीजारोपण हुआ।

महाराजसे विदाय लेते वक्त एभल खाचर ने कहा : "महाराज, एक बार गढडा जरूर पधारना।"

महाराज बोले : "गढडा जरूर आयेंगे गढडा तो हमारा खुद का गांव है।" यह शब्द सुन कर सभी के हृदय खुशी से भर गये।

महाराज गढडा पधारे तब एभल खाचर का समस्त परिवार श्रीहरि की सेवा में तन्मय हो गया। कथा, कीर्तन के दौरान सभा में स्त्री वर्ग जहां बैठा हो वहां जीवु बा तथा लाडुबा लाज (घुंघट) नीकाल कर बैठे। कारण की परपुरुष का मुख न देखना उनका दृढ व्रत था।

"Simple living & high thinking." "सादगी भरा जीवन तथा उच्च विचार" ये सूत्र दोनो बहनो ने अपनाया था। तथा आहार - विहार में भी संयम रखती थी।

दोनो बहने उंमर लायक हुई है। महाराज ने एभल खाचर की चिंता जान कर कहा, "एभल खाचर ! मैं समझता हूँ। आपकी दोनो बेटी बडी हो गोयी है उनकी चिंता आपको खाये जा रही है। चारण लाडुदान भगत महा विद्वान है। वे आपको लग्नग्रंथि की महिमा बतायेंगे। इस देवीपुत्र पर सरस्वती की कृपा हुई थी। वे शीघ्र कवि कहलाते थे।"

महाराज ने इस बाल ब्रह्मचारी को लग्नग्रंथि का बोध देने भेजा। बीचमें पडदा रखा और एभलखाचर लाडुदानजी के पास बैठे। अन्योन्य 'जय स्वामिनारायण' कह के इस देवीपुत्र ने वार्तालाप शुरु किया।

"परम कृपालु परमात्मा ने आपको उत्तम कुल में जन्म दियाहै। आप तो रूप, गुण,तथा बुद्धिमत्ता से शोभायमान है ऐसा मैंने सुना है। इसलिए कन्याकाल बीत जाए उससे पहले विवाह कर गृहिणी पद पर शोभित होना चाहिए।"

लाडुबा ने कहा : "वैसे तो भक्त नारी लोयण लग्नग्रंथि से कहां जुडे थे ?"

"गृहिणी धर्म का पालन करते करते भी भगवान की भक्ति हो शकती है। मीराबाई परिणीत होने के बावजूद "मेरे तो गिरिधर गोपाल....." यह कह के भक्ति में रत रही।"

जीवुबा तुरंत बोली : "देवीपुत्र ! आपने दृष्टांत गलतदिया, उन्हो ने विवाह किया था, परंतु संसार नहीं बनाया था।"

यह वार्तालाप बहुत लंबा चला। लाडुदानजी ने दोनो बहनो को मनोमन धन्यवाद दिया। परंतु हार कर लौटना पसंद न आया। और बोलना चालु

रखा । "ब्रह्माजीने स्त्री - पुरुष का सर्जन इसलिए किया है कि सृष्टि का क्रम चलता रहे ।"

"परंतु हमे तो ये सब ब्रह्ममय लगता है । हम भी ब्रह्म है । आप भी ब्रह्म हो । सर्वत्र ब्रह्म हो । ब्रह्म का ब्रह्म के साथ समन्वय करो तो ब्रह्म तो रहेगा ही और ब्रह्म को घटावो तो भी ब्रह्म रहेगा ही ....."

लाडुदानजी तो एकाग्रता से इन जीवनमुक्ति परमज्ञानी और ब्रह्मचारी बहनो को सुन रहे थे । मनोमन सोच रहे थे, "नमक सागर को नापने गया लेकिन गल गया ।"

"लाडुदानजी ! शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध में आशक्त हो कर, अस्तित्व की अनुभूती कर हिरन, हाथी, तितली, मछली, भौरा इत्यादि जीव अपने प्राण गवांते है । किन्तु मनुष्य के पास समझ तो है । उसे अच्छे बुरे को समझने की शक्ति ईश्वर ने दी है .....श्रीजी महाराज का दर्शन कर उनकी अमृतवाणी का आस्वाद लेकर, कीट - भ्रमर न्याय से हमारे अंत:करण को अनुभूति हुई है । वह आपको बता रही है । आप अब भी राजर्षि हो ऐसा लगता है । इसलिए ब्रह्म स्वरूप को पहचानकर, ब्रह्मरूप हो कर ब्रह्मानंद का आप अनुभव करो ।"

"सर्वं खलु इदं ब्रह्म ।" तथा " ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति ।" इन अनुभव चिन्हो को अपने जीवन में आत्मसातकिया था ऐसी ब्रह्मज्ञानी जीवुबाने पडदा हटा करआगंतुक योगीराज समक्ष योगदृष्टि की ।

लाडुदानजी स्तब्ध हो गए ! जीवुबा के नेत्र में से दिव्य ज्योति के प्रकाश पुंज अपनी तरफ आते हुए अनुभव किए । उन महाकवि ने दोनो बहनो को जय स्वामिनारायण किया ।

महाराजने कविराज को पूछा, "कविराज ! दोनो बहनो का लग्न मुहूर्त नक्की किया या नहीं ?" "महाराज ! आप तो अंतर्यामी हो । वे दोनो ब्रह्म स्वरूपिणि बहनो के पास से 'लग्न' का सच्चा अर्थ मै शीखा हूँ ।"

"महाराज मुझे दीक्षा दीजिए ।" लाडुदानजीने तुरंतराजशाही वस्त्र उतार कर भगवा वस्त्र धारण किया । महाराज ने उन्हे दीक्षा दी और 'ब्रह्मानंद' नाम रखा । उन शीघ्र कवि ने बडी संख्या में कीर्तन का निर्माण किया ।

श्रीजी महाराज की लीला अपरंपार है । दूसरे भी एक जीव का उद्धार करने के लिए उन्हीं ने जीवुबा का लग्न कुंडल गांव के अमराभाई से करवाये किंतु संसार से विरक्त ऐसे जीवन मुक्त आत्मा को संसार के बंधन पसंद आते क्या ? परमज्ञानी जीवुबा ने पति को तत्वबोध दिया तथा भगवान श्री स्वामिनारायण की महिमा समझा कर श्रीजी महाराज का अनन्य भक्त बनाया । पश्चात् उनकी गुणियल 'रायबा' सासु के समक्ष मनोभाव व्यक्त किया ।

उन समजदार रायबा को हुआ की "सचमुच ! कोई योगभ्रष्ट आत्मा पुत्रवधु के रूप में पधारी है ।" सासु रायबा ने जीवुबा को अपने मायके जाने की अनुमति दे दी । जीवुबा के आनंद की कोईसीमा न थी । वे रथ में बैठ कर कारियाणी से गढडा जाने के लिये रवाना हुई ।

मार्ग में रथ चलाने वाले ने बीच में रथ रोका । छोटी सी पगदंडी पर कोईसंत सो रहे थे । उनके साथी संत को पूछा तो बताया की पेट दर्द से जरा अशक्ति आगयी है इसलिए सो रहे है । जीवुबा घूंटल नीकाल कर रथ से उतरी और कहा की, "इन संत को जहां जाना हो वहां रथ में बैठा कर ले जाओ । मैं चल कर गढडा पहुंच जाउंगी ।"

सत्संगी लोग जीवुबा को 'माताजी' के रूप में वंदनीय और पूजनीय गीनते उनके पति अमराभाई श्वासोश्वास में "स्वामिनारायण.... स्वामिनारायण....." रटन करते । एक दिन मध्यरात्रि के वक्त महाराज ने उनको दर्शन दिए । अमराभाई का कमरा तेजपुंज से भर गया ! "महाराज ! मैने तो आपको बुलाया नही है और मध्य रात्रि को आपको बुला कर कष्ट क्यों दूं ?"

"भक्तराज ! आपके श्वासोश्वास में मेरा रटन चलता है, इसलिए मुझे आना ही पडता । भक्त और भगवान ने ज्ञान गोष्ठि की । इस प्रकार महाराज ने अमराभाई का जीवन सार्थक किया ।"

सच्चा सुख सतसंग के अपनेपन में

"ध्यान धरो धर्म के पुत्र का"

- पटेल गांडाभाई मोहनलाल (कोल्हापुर)

ध्यान धर ध्यान धर धर्मना पुत्रनुं,
जेथकी सर्व संताप नासे ।
कोटि रविचंद्रनी कांति झांखी करे,
एवा तारा उर विषे नाथ भाषे ॥

मुक्तानंद स्वामी

भगवान के साथ संबंध जोडने के लिए परमात्मा के साथ का आनंद तथा सच्चा सुख प्राप्त करने के लिए मनुष्य के जीवन में ध्यान का महत्व जितना है उतना अन्य कोई साधन में नहीं हे। अपने जीवन में विकास का एक मात्र साधन ध्यान ही है । अखंड चिंतन, मनन, आखंड ध्यान से श्रीजी महाराज का सांनिध्य संभव है ।

इस पर एक दृष्टांत है। एक कीड़े को भंवरी अपने नीड़ में लाक र वारंवार डंक मारती है जिससे कीडे को सतत भंवरी का स्मरण होता रहता है। परिणाम स्वस्म कीड़ा भंवरी बन जाता है ।

इसी विषय को आध्यात्मिक मार्ग में अखंड ध्यान करने से होता है। सतत अखंड परम परमात्मा का ध्यान चिंतन मनन करने से जीव ब्रह्ममय प्रभुमय हो जाता है। यही आत्मा के लिए मोक्षमार्ग का साधन बन जाता है ।

ध्यानमात्र श्रीजी महाराज की मूर्ति का करना चाहिए । इसके विना किसी का ध्यान नहीं करना चाहिए । इनकी केवल पूजा अर्चना हो सकती है। इस मर्यादा को श्रीजी महाराजने वचनामृत में बताया है। इसके अलांवा ध्यान का अधिकारी वही है जिसे श्रीजी महाराज में निष्ठा हो, श्रद्धा हो । वही श्रीजी महाराज का ध्यान कर सकता है। तभी वह तीनो तापो से दूर हो सकता है ।

श्रीजी महाराज के ध्यान का समय है ब्राह्ममुहूर्त । इस लिए सत्संगी को चाहिए कि ब्राह्म मुहूर्त मे उठकर श्रीजी महाराज का ध्यान करें ।

प्रत्येक सत्संगी को श्रीजी महाराज के अखंड ध्यान की टेव डालनी चाहिए। जिसके लिए निरंतर स्मरण ध्यान करते रहना चाहिए। मन के संकल्प को रोकना, बुद्धि को तर्क से दूर रखना, सभी इन्द्रियों को श्रीजी महाराज के चिंतन में लगाना, इस प्रकार श्रीजी महाराज की मूर्ति को धीरे-धीरे चित्त में उतारते रहना चाहिए। अपने संप्रदाय में श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्तिको ध्यान करने का ४ प्रकारहै।(१) स्वांग (२) उपांग (३) सपार्षद (४) सलील ।

ए चार प्रकार ध्यान के हैं। जिससे श्रीजी महाराज का ध्यान किया जा सकता है। इस तरह ध्यान करते करते उनके स्वस्म को हृदय में विराजमान करना चाहिए। उस समय संसार की कोई भी आधि-व्याधि-उपाधि अथवा सुख के स्वप्नों को थोड़ा भी स्पर्श होने नहीं देना चाहिए। इस के बाद ब्रह्मलीन हो गये हैं - ऐसा भाव चित्त में लाना चाहिए। एकाग्रता से मन दृढ होता जायेगा । श्रीजी महाराज की मूर्ति का स्मरण होने से सुख की प्राप्ति होगी ।

आज ही तत्काल यह सुख संभव नहीं है। परंतु अपनी श्रीजी महाराज में जितनी निष्ठा-श्रद्धा होगी, शरणागति होगी, विरह वेदना होगी उतनी जल्दी सफलता मिलेगी। उतनी जल्दी श्रीजी महाराज ध्यान में आयेंगे । आपकी आत्मा को परम चरम शांति मिलेगी। वह आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसो, या वरसो में या इस जन्मान्त में अन्यथा जन्मान्तर में श्रीजी महाराज का दर्शन तो होगा ही ।

(१) स्वांग ध्यान : इस ध्यान में श्रीहरि की मूर्ति के चरणारविन्द से शिखा पर्यन्त सभी अंगो का पृथक्-पृथक् चिन्तन करके, ध्यान करके आनन्द उठाना चाहिए । भगवान श्री स्वामिनारायण के नाम का ध्यान, सतत जपात्मक स्मरण करते हुए श्रीजी की मूर्ति से एक विशेष प्रकाश का दर्शन होगा। उस तेजोमय वातावरण में आप अपने पन को भूल जायेंगे । जिससे आपको आनंद की अनुभूति होने लगेगी। आप रोमाञ्चित होने लगेंगे । ब्रह्म कमल खिलने लगेगा । बाद में आत्मा का परमात्मा के साथ साक्षात्कार होने लगेगा ।

(२) उपांग ध्यान : इस ध्यान में श्रीहरि की मूर्ति का अद्भुत अलंकारो से सुसज्ज शोभायमान स्वस्म था ध्यान करना होता है । मेरे प्रभु के चरणों में लाल कंकु लगा है। पीले कलर की रेशमी पीताम्बर पहने हुए हैं। पैर में नूपुर पहने हुए हैं। नाभी गंभीर है। उदर में त्रिवली रेखा है। मस्तक पर पगडी धारण किये हुए हैं। मोर मुकुट सुशोभित हो रहा है।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १५

सत्संग सुरभि - मैं साथ मे हूँ तो चिंता किसकी ?

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला

श्रीजी महाराज सर्वप्रथम मंदिर का निर्माण अहमदाबाद में करवाये । पेशवा के सूबा ने तो महाराज को अहमदाबाद में पुनः पग रखने के लिए मना कर दिया था । परंतु छ महीने होते ही पेशवा का पग स्वयं अहमदाबाद से उखड गया । अंग्रेजी सत्ता का शासन हो गया ।

अंग्रेजी सत्ता के पास शासन चलाने की कुशलतां थी जिससे उन्होंने उस समय काठी-कोल की ज़ाति के लोगों को सामाजिक सुधारकी एकक्रांति पैदा करने वाले श्रीजी महाराज की तरफ दृष्टि की और उन्हे अपना बनाना चाहा, परिणाम स्वरूप अहमदाबाद के उस समय के अधिकारी श्री डनलोप साहब भी श्रीजी महाराज की प्रशंसा करते और आदर करते ।

श्रीजी महाराज अमदाबादमें मंदिर बनाने के लिए खोज कर रहे थे । गोरा अधिकारी श्री डनलोप साहेब सामने से महाराज से निवेदन किया कि आप यहाँ पर अपना मंदिर बनाइये साधु-सत्संगीको रहने के लिए स्थान बनाइए, आप जहाँ कहिए जमीन की व्यवस्था करदें ।

कालुपुर विस्तार में पाठक वाड़ी की जगह पसंद आ गयी । महाराज में अनन्य आदर होने से अंग्रेजी अमलदार ने यावत् चन्द्रदिवाकरौ ताम्रपत्र पर लिखकर जमीन श्रीहरि को अर्पण कर दिया ।

महाराजने उस जमीन पर विश्वका सर्व प्रथम अद्वितीय श्री स्वामिनारायण मंदिर बनवाया । आनंदानंद स्वामी की देखरेख में अति भव्य मंदिर का निर्माण हुआ । गाँव-गाँव से हरिभक्त आये और भव्य उत्सव मनाया गया । श्रीपुरनगर (अहमदाबाद) में महाराज की दिव्य शोभायात्रा निकली । धूमधाम से भगवान नरनारायणदेव की मूर्ति की प्रतिष्ठा की गयी । बाद में महाराजने विचार किया कि चौराशी गाँव के ब्राह्मणो को भोजन करवाया जाय । लेकिन इनती पूजी तो है नहीं । कोई धनी मिलजाय तो काम हो जाय । इतने में किसी ने महाराज को लालदास गोरा का नाम बताया । महाराज ने लालदास गोरा को बुलाकर कहा कि - "हमे ब्राह्मणो को भोजन कराना है, सात हजार रुपये की व्यवस्था हो सकती है क्या ?"

लालदास विचार में पडगया कि रुपये तो दे देंगे, लेकिन लड्डू ब्राह्मणो के पेट में जायेंगे क्या उससे रुपया हो पायेगा ? हाँ - ना के बीच में लालदास घर आये पत्नीने पूछा क्या करके आये ?

लालदासने महाराज की बात कही "पत्नी ने कहा इसमें विचार करने की क्या बात है । महाराज तो रुपये क्या सम्पूर्ण मकान मांगले तो हम पीछे नहीं हटेंगे । संपत्ति तो आज है सायद कल नहीं रहे ।

पत्नी कितनी बुद्धिमान थी ? महाराज मागे तो उसमें मुंह फेरने की कोई जरूरत ही नहीं ।

लालदास तो दौडते हुए महाराज के पास गया और रुपये को चरण में भेंट कर दिया ।

महाराजने घर-घर ब्राह्मणों को निमंत्रण दिया । कांकरिया तालाब के किनारे भोजन की व्यवस्था की गयी । हजारों ब्राह्मणों के भोजन लेने के बाद हरि भक्त भोजन लिए बाद में महाराज ने लिया । बाद में सभा प्रारंभ हुई । भक्तोने महाराज का पूजन अर्चन किया और भेंट अर्पण किये । कोठारी ने भेंट की रकम को गिना तो ७ हजार रुपये से अधिक आया । महाराज ने कहा, यह सात हजार उस लालदास को दे दीजिये ।" यह आधा रुपया किसका ? कोठारी ने मजाक में पूछा ।

महाराज मंदमुस्कान के साथ बोले "यही अपनी बचत" इसे मंदिर के हिसाब में ले लीजिए । कोठारीने कहा इस आधे रुपये से इतने बडे मंदिर का क्या होगा । महाराज ने हंसते हुए कहा हम साथ हैं आपको क्या चिंता ? मैं साथ हूं फिर चिंता करने की जरूरत नहीं है । इस अमोघ वचन की नाद समग्र सभा में गूंज गयी । मानो सभी के अन्दर में महाराज विराजमान हो ऐसी सभी को अनुभूति होने लगी । बस महाराज हमारे साथ हैं तो चिंता क्या करना ।

चारो तरफ महाराज की जय जयकार होने लगी । मंदिर बनाने के बाद मंदिर में भगवान नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा हुई पश्चात आज तक महाराज की यह

उक्ति "मैं आप सभी के साथ हूँ" इसे चरितार्थ कर रहे हैं। श्री नरनारायणदेव के सन्मुख हजारो पाटोत्सव तथा उत्सव हुए है। कभी हजारो रुपये खर्च करके तो कभी तुलसीका पत्र चढाकर उत्सव मनाया गया, लेकिन कीसी से आग्रह प्राप्ति के लिए नहीं किया गया। यह प्रेरणा, यह वचन तथा यह प्रणालिका आज भी अविरत बह रही है। महाराज को साथ रखो तो कोई चिंता की जरुरत ही नहीं। कल्पतरुऐसा वृक्ष है जो स्वयं कोई अपेक्षा नहीं करता, उसके नीचे बैठने वाला जो इच्छा करे उसे वह फल मिलता है लेकिन श्रीजी महाराज ऐसे कल्पतरु है जो सभी स्वीकार भी करते हैं और उसे इच्छित फल भी देते हैं। महाराज की शरणागति ही कल्याण है। उस समय का आधा रुपया तथा महाराज का आशीर्वाद दोनो हीं आज नरनारायणदेव के कोठार को भरपूर कर के रखा हैं।

सच्चा सुख सतसंग के अपनेपन में

"ध्यान धरो धर्म के पुत्र का"

पृष्ठ १३ से आगे

कंठ में हीरा-मोती, जड़ित हार पहने हुए है। शोभा बढाते हुए मकराकृति कुंडल कानो में लटक रहे हैं। हाथों की शोभा बाजूबन्द से और ही चमत्कृति प्रदान कर रही हैं। अंगुली में अंगूठी रत्न जटित शोभित हो रही है, इस प्रकार प्रभु के प्रत्येक अंगो में हीरा जडित आभूषण शोभित हो रहे हैं।

गले में मोगरा की सुगन्धित माला धारण किये हुए हैं। जूही पारिजात तथा अन्य पुष्पों के गजरा आपकी शोभा को बढा रहे हैं। भाल पर पीले गोपी चन्द का तिलक किये हुए हैं। मंद-मंद मुस्कान करते हुए, खंजन नेत्रवाले, दक्षिण कपोल पर काला तिल, वाम कर से अभयदान करते हुए, दक्षिण हाथ में कर माला फेरते हुए। जिसका तेज चारो तरफ फैल रहा है ऐसी तेजोमय दिव्य मूर्ति श्रीहरि की है।

इस प्रकार श्रीहरि के मूर्ति का ध्यान करना चाहिए। इसके अलांवा संसार के सुख-दुःख को भुलाने का कोई उपाय नहीं है। उनके स्वरुप में विलीन हो जाना, उन्हीं के स्वरुप का स्मरण करना, बाद में वही मूर्ति हृदयाकाश में विराजमान होकर नित्य आनंद को देने वाली हो जायेगी। फिर तो ध्यान की पराकाष्ठा का अनुभव होता ही रहेगा।

(३) सपार्षद ध्यान : इस ध्यान में श्री सहजानंद स्वामी के दरबार का ध्यान है। श्रीजी महाराज गढडा में दादा खाचर के दरबारमें उत्तर के बरामदे मे सुंदर गादी-तकीया डलवाकर उसी पर विराजमान है। उनके समक्ष अनंत कोटी मुक्तो, मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी इत्यादि संत, मुकुंद ब्रह्मचारी जैसे अखंड सेवाधारी, मायाराम भट्ट, दादा खाचर जैसे गृहस्थ श्रीजी महाराज के पीछे पार्षद खडे है। और गाँव तथा गाँव के बाहर के हरिभक्त, सत्संगी बैठे हैं। श्रीहरि का चंदन पुष्प आदि से पूजन होता है। उनकी प्रार्थना होती है। ताल बद्धता से भजन हो रही है। तब श्रीजी महाराज कहते है की अब भजन-कीर्तन छोडो। थोडी कथा वार्ता करते है। आपस में प्रश्नोतर करते है। इस प्रकार श्रीजी महाराज की अमृतमयी वाणी वचनामृत के रुप में सुनने मिलती है। सभी लोग निष्ठापूर्वक सुनते है। और बहुत आनंदित हो जाते है।

ऐसे श्रीजी महाराज का सपार्षद दरबार का ध्यान करना और जगत का ध्यान करना सपार्षद ध्यान कहलाता है। तब लगता है कि हम जैसे सत्संग सभा में बैठे है और श्रीजी महाराज वचनामृत कर रहे है ऐसा ध्यान होता है।

(४) सलील ध्यान : इस ध्यान में श्रीहरि का प्रवाहित जीवन लीला चरित्र का ध्यान चिंतन है। जैसे की छपैया में बाल-लीला, श्री निलकंठवर्णी का वन विचरण लीला, वर्णी का मुक्तानंद स्वामी के साथ आश्रम में रहना, गुरु रामानंद स्वामी से मिलन उनकी दीक्षा तथा गादी सोंपना। स्वामी सहजानंद के रुप में सत्संग करना। गाँव-गाँव में विचरण, श्रीजी का गढडा निवास, दादा खाचर का प्रेम, संतो के साथ घेला नदी में स्नान लक्ष्मीवाडी में संतो के साथ क्रीडा, संतो के साथ होली खेलते, रास खेलते, संतो भक्तो को खुशी-खुशी खिलाते। सभा में ज्ञान वार्ता में हंसी-मजाक करते। किसी को भजन गाने को कहते। किसी हरिभक्त के यहाँ खाने को कहते। इस प्रकार की लीलाओं का चिंतन करते हुए श्रीजी महाराज में खो जाना चाहिए।

इस प्रकार प्रत्येक सत्संगीजन अनुकूलता अनुसार निश्चित करे। यह ध्यान श्रीजी महाराज के सांनिध्य को प्राप्त करने वाला है।आप के संताप को दूर करने वाला है। इसी से जीवन में आनन्दानुभूति हो सकती है। इसलिए सभी ध्यान में स्वांग ध्यान श्रेष्ठ है। इसी से समाधि की स्थिति प्राप्त हो सकती है।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म

- मोतीलाल बी. चौहाण
(माणामोर - हालार)

गुरुपूर्णिमा के परमपवित्र मंगल शुभ दिन में इष्टदेव परम कृपालु परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण तथा समस्त उद्धव सम्प्रदाय के आचार्य श्री धर्मवंशी धर्मकुल भूषण प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज श्री के चरण कमल में साष्टांग प्रणाम कर के गुरु ऋण को अदा करके जीवन में धन्यता का अनुभव करें।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अपने धर्मशास्त्र, वेद, पुराण, उपनिषद् के कर्ता भगवान वेदव्यास नारद, सनकादि, ऋषियों ने, भक्त कवियों ने तथा दैवी पुत्रों ने गुरु के विषय में बहुत सारे ग्रन्थ लिखे हैं। लेकिन शास्त्रों के सम्पूर्ण तत्व को जान नहीं सकते। उपरोक्त श्लोक के अर्थ को मनन करने से जो अर्थ घटन करते हैं उससे भी अधिक महत्व है।

भगवान दत्तात्रेय ने अपने जीवन में २४ गुरु बनायें थे। कोई उस गुरु का अर्चन - पूजन नहीं किया। क्योंकि यह गुण गुरु कहा जा सकता है। इस केसाथ इनकी पूजा - अर्चन से किसी जीवात्मा का क़ल्याण हुआ है ऐसा किसी शास्त्र में मिलता नहीं है। अर्थात् गुरुद्वारा जीव का कल्याण हो, मोक्ष की प्राप्ति हो अर्थात् उस परमात्मा की प्राप्ति में प्रत्यक्ष सहायक होने से ही गुरु को साक्षात् परब्रह्म की उपमा दी गयी है। परन्तु आज के कलिकाल में सनातन धर्म के सिद्धांतो को ताक पर रखकर, वेद शास्त्रों की अवगणना करके स्वार्थी प्रपन्ची, स्त्री - धन का लोलुप, स्वयं गुरु बन बैठे हुए व्यसनी, व्यभिचारी आडम्बर की चादर ओढकर जगत के जीवों को ठगने के सिवाय उनका क्या वे कल्याण करेंगे ? जिसके माध्यम से गोविन्द की पहचान हो, प्रगट प्रभु का परिचय हो, दर्शन हो, स्पर्श का सुख मिले, जिस के माध्यम से जीवात्मा का आधि, व्याधि, उपाधि, ताप, पाप, संताप, दूर हो ऐसा सामर्थ्य जिस गुरु में हों उसी से जीवात्मा के कल्याण की आशा रखनी चाहिए। वही गुरु - गोविन्द का दर्शन करा सकते हैं।

गुरु गोविन्द दोनो खडे, का के लागू पांय।
बलिहारी गुरुदेवकी, गोविन्द दियो बताय ॥

गुरुकी कृपा के बिना गोविन्द की कृपा सम्भव नहीं है। इसीलियें तो गुरु को गोविन्द की अपेक्षा प्रथम प्रणाम करने का अधिकारी बताया गया है। गुरुके माध्यम बिना गोविन्द को पहचानना कठिन है।

सर्वोपरि सर्वावतारी अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति भगवान स्वामिनारायम भी रामानन्द स्वामी को गुरुबनाकर दीक्षा ली थी। समर्थ स्वामी रामानन्द जीने तथा रामानुजाचार्य ने भी गुरु बनाया था। इस प्रकार गुरु परंपरा अनादि काल से सम्प्रदाय में प्रसिद्ध है। यही भारतीय संस्कृति है। इसीलिए श्रीजी महाराज ने धर्मकुल को अत्यन्त पवित्र मानकर सम्प्रदाय की गादी पर गुरु के रूप में अभिषिक्त किया। और सभी त्यागी गृही को इन्ही की आज्ञा में रहने को कहा। महाप्रतापी श्रीजी के शिष्य सन्त कवि स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने पुरुषोत्तम प्रकाश नामक ग्रन्थ में आचार्य तथा गुरु के विषय में भजनों को संग्रहीत किया है। जिन्हे यहां संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

मोटा मोटा कराव्या मंदिर रे।
तेमां राख्या संत सुधीर रे।
वसी केमशकसे वीतरागी रे।
ममता विना मंदिर केम रहेशे रे।
वात बन्ध केम बेसे रे ॥

हमने इन बडे-बडे मंदिरो को बनवाया उसमें सत् शास्त्रों के रचनाकार सन्तों को रखा। परंतु ये सन्त त्याग वैराग्य वाले हैं। यही लोग इन मंदिरों का रख रखाव कर सकते हैं। इन्हीं सन्तों को ध्यान में रखकर कहते हैं कि :-

एना करुं एक धणी रे,
राखे खबर एनी घणी रे।

इसलिये ऐसे शुभ संकल्प को प्रधानता देते हुए श्रीजी महाराज कहते हैं कि - हमारे धर्मकुल में से इस संप्रदाय की गादी का वारिसदार बन सके इस ध्यान से बडेभाई रामप्रतापजीके पुत्र श्री अयोध्याप्रसादजी को तथा छोटे भाई इच्छारामजी के पुत्र रघुवीरजी महाराज को संप्रदाय की धर्मधुरा सौंपते हैं। इसी सन्दर्भ में कहते हैं कि -

स्थाप्या पोते दत्तपुत्र स्थिर रे,
अवधप्रसाद रघुबीर रे।
तेने आपे कर्या आचारज रे,
करवा बहुजीव ना काज रे॥
साधु सत्संगी ना गुरु कीधा रे,
देश उत्तर दक्षिण बेचीं दीधा रे।

इस प्रकार श्रीजी महाराज ने स्वयं अयोध्याप्रसादजी महाराज को तथा रघुवीर महाराज को सम्प्रदाय का आचार्य तथा गुरु के स्प में मान्यता दी। पुनः कहते हैं -

एम आचार्य थकी कल्याण रे,
थाशेसह जीवनु सुजाण रे।

इस प्रकार - एम मोट्यप आचार्यनी
घणा - घणी कीधी घनश्याम।
एह धारे अनेक ने,
आपवु छे निज धाम।
धर्म कुल नु जे अनुसरे,
त्यागी गृही नर नार।
परिश्रम विनानी पामशे,
अपार भव नो पार॥

पुनः कहते हैं -
गुरु करी सौंपी गादी रे,
रीत राखशे ए रायजादी रे।
धर्मवंशी आचार्य धार्या रे,
गुरु करी गादीए बेसाड्या रे।
धर्मवंशी आचार्य मांये रे,
सदा रह्या छुं मारी इच्छाए रे॥

इस प्रकार धर्मवंशी को गद्दी तथा आचार्यत्व दोनो सुपूर्द किया। इन आचार्यो की रहन -सहन संतो जैसी शुद्ध व्यवस्था की। सेवा सत्कार भी ऐसा ही करना। हम अपनी इच्छा से इन में रहेंगे। इन्हीं के माध्यम से हम जीव का कल्याण करेंगे। भवसागर से पार लेजाने को कहते हैं -

एने पूजो हुं पूजाणो रे,
ते तो जरूर जनमत जाणो रे।
एम जाणी तेजो सौ जन रे,
एम बोलिया श्री भगवन रे।
मन कर्म वचने सौ मानजो,
एमा संशय नथी लगार।
एह द्वारे मारे अनेकनो,
करवो छे उद्धार।

श्रीजी महाराज आचार्य से अनेक जीवों के उद्धार की बात किये हैं। वह किस प्रकार तो कहते हैं -

मारे सौ रहेजो एना वचने रे,
त्यागी गृही सौ एक मने रे।
रहेजो धर्मवंशीने गमते रे,
वर्तोशो मां कोई मनमते रे।
एह कहे तेम सौ करजो रे,
पूछ्या विना पग नई भरजो रे।
एने राजी राखजो सौ तमे रे,
तो राजी रहेशु अमे रे।
माटे सौ धर्मकुल ने मानजो,
सहुकरजो एनी सेव।
अन्यजन जेवा ए नहि,
ए छे जाणजो मोटा देव॥

प्रिय भक्तजन श्रीजी महाराजने स्वमुख से ध.धु.आचार्य महाराजकी कितनी महिमा गाई है। उपरोक्त बचनों से स्पष्ट हो रहा है।श्रीजी महाराज को अपना इष्ट देव मानते हैं। परम परमात्मा मानते हैं। सर्व अवतार के अवतारी मानते हैं तो उनकी वचन का ख्याल करना ही पडेगा। धर्मकुल को प्रसन्न रखेंगे तो हम प्रसन्न रहेंगे। दूसरे पुरुष की तरह सामान्य नहीं मानना है। इन्हीं के द्वारा जीव का कल्याण सम्भव है। श्रीजी महाराज कहते हैं :

एने राजी राखशे जे जन रे,
एणे अमने कर्या प्रसन्न रे।
वचन द्वारे अमे एमा रे,
तमे फेर न जाणशो तेमां रे।
अमे एमां ए छे अममाय रे,
एम समझो सौ बाई भाई रे।
एथी अलगा अमे न रहिये रे,
एमां रहीने दर्शन दइये रे॥

इस प्रकार भगवान स्वामिनारायणने स्वमुख से ध.धु. आचार्य महाराजश्री को सम्प्रदाय के गुरु के स्प में नाना विध उपदेशात्मक आज्ञा की जो प्रायः सभी शास्त्र कहते हैं। संप्रदाय के सभी धर्म ग्रन्थ इस बात से अछूते नहीं हैं। इसलिए सम्प्रदाय के आचर्य जो धर्मकुल के हों उन्हीं में गुरुभाव रखकर उन्हीं की आज्ञा में रहना श्रेय की प्राप्ति का कारण है।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

उसे आसुरीजीव कहा जाता है

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

चौमासा की ऋतु कितनी सुहावनी? तीनो ऋतुओ में चौमासा की ऋतु सात्विक कही गयी है । इसीलिये अपने संत ने चौमासा की उपमा खूब दिये हैं । अषाढ का महीना हो, आकाश बादलो से घिरा हो, झिर मिर-झिर मिर बरसात हो रही हो, भगवान को झूले मं बैठाकर झुलाते हो, उस समय सहृदय कवि की कविता कहती है -

"झरमर, झरमर मेहुलो वरसे,
गरजे गंभी रे ..... नाथजी
ने झुलाऊं ..... धीरे"

ऐसे चौमासे की ऋतु में एक किसान अपने बेटे को खेत में लेकर जा रहा था । आज स्कूल में अवकाश था । जिससे वह बालक घूमने के लिए पिता के साथ गया हुआ था । उसका नाम गौरव था । गौरव खूब चालाक, उत्साही, होंशियार तथा जिज्ञासु था । बडी जिज्ञासा से किसी नयी वस्तु को देखता और उसे पूछता । रास्ते में एक बड़ा वृक्ष दिखाई दिया, पिता से पूछा पिताजी ? यह बडा वृक्ष किस चीज का है । पिताजी ने कहा पुत्र ? यह आम्र वृक्ष है । इसी का गर्मी में रस पीते हैं । पिताजी ! इस समय आम्रफल क्यों नहीं होता ?

पुत्र ? वसंन्त ऋतु में फूल आता है, बाद में फल आता है । इसके बाद जब गर्मी तपती है तब आम्रफल पकता है । उसे बडा आनंद आया । बाद में बरगद, पीपल, आमली, खजूर, महुआ, आसोपालव, उदुम्बर, नींब, केला, बैर, ताड इत्यादि के विषय में गौरव ने जानकारी की ।

रास्ते में कोयल की वाणी सुनाई दी । एक वृक्ष पर काला छोटा पक्षी बैठा था । पिताजी । इस पक्षी का क्या नाम है । पुत्र ! यह कोयल है । कितनी सुंदर बोलती है । पिताजी ? ऐसा बोलना हो तो ? नकली आवाज निकालने की कोशिष भी किया । पिताजीने कहा तुं संगीत सीखेगा तो तेरी आवाज ऐसी हो जायेगी । तो पिताजी संगीत अवश्य शीखना है ।

पितापुत्र बात करते आगे बनराजी देखते निकल रहे थे । वहाँ गौरव की नजर एक छोटे सूखे वृक्ष पर पडी । पिताजी ! पिताजी ! देखिये उस वृक्ष की तबियत बिगड गयी है । सभी वृक्ष हरेभरे है एक ही ऐसा विमार क्यों है । हमारी तबियत बिगडती है तब हमें दवा खिलाते हैं और हम ठीक हो जाते है, ऐसे इसे भी दवा खिला दीजिए यह भी ठीक हो जाय तब पिताजीने कहा गौरव ! तुम्हारी बात सही लेकिन यह वृक्ष बिमार नहीं है . यह वृक्ष ही ऐसा है जो पानी मिलने पर सूख जाता है, दूसरे वृक्ष पानी में हरेंभरे होते है, किन्तु यही वृक्ष ऐसा है जो पानी से सूखता है गर्मी में हराभरा रहता है - इसमें पानी का दोष नहीं है, वृक्ष का दोष है । पिताजी ! यह नई बात जानने को मिली ।

इसके साथ यह बी जानने योग्य है कि इस वृक्षको निष्कुलानंद स्वामी भी जानते थे । इसीलिए इस बात को निष्कुलानंद स्वामी ने काव्य के रूप में वर्णन किया -

"जवासो जेमजल मले,
जाय समझो सुकाई ने ।
तेम अभागी आ कथा थी,
दुष्ट जाशे दुखाईने ।"

अमृत जैसा जल मिलने से जवासो वनस्पति सूख जाता है, जैसे उसे अनुकूल नहीं आता वैसे ही जवासों जैसे जीव को भगवान की भक्ति भजन, कथा-वार्ता, सत्संग यह सभी अनुकूल नहीं आता है । जबकि, मुमुक्षु जीव को इन सभी से आनंद मिलता है । जवासो जैसा जो होता है वह दु:खी होता हैं । उन्हे आसुरीजीव जानना चाहिए ।

मित्रो ! स्वामिनारायण भगवान की भजन भक्ति, कथा-प्रवचन में किसे आनन्द नहीं आता । जवासो जैसों को ही आनंद नहीं आता है ।

इसलिए परमात्मा की भजन-दर्शन नियमित करना चाहिए ।

•

भगवान के भक्त वंदनीय हैं ?

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

यह एक प्रवास की बात है । मुसाफिरी करने तो सभी जाते हैं । जिसे घूमने की इच्छा हो वह अवश्य जाता है । चतुर भी प्रवास में जाते हैं मूर्ख भी जाते हैं । लेकिन जाने वालों में फर्क होता है । सभी के विचार एक जैसे नहीं होते । एक मुसाफिर था । वह मुसाफिरी करने गया । वह साथ में एक तपेली मात्र रखा था । लेकिन अब बात क्या है ? बात यह कि जहाँ पहुँचना था वहाँ पहुंच सका नहीं, बगल के गाँव में उतारा किया । और रात बिताया । कहीं से एक मुठ्ठी चावल-दाल मांग लाया खिचडी बनाया । लेकिन खिचडी बनाने तो उसे आता नहीं था । फिर भी भूख मिटाने की उपाय तो करना ही पडे । अब हुआ ऐसा कि खिचडी जलने लगी, और उसे भान रहा ही नहीं । जले की गन्ध से ख्याल आया कि खिचडी जल रही है । इसलिए चुल्हे से खिचडी जल्दी उतार दिया । लेकिन वह स्वाद तो अब रहा ही नहीं । लेकिन भूख मिटाने के लिए जैसी थी वैसी खा लिया । रात बीत रही थी इसलिए बर्तन माजने में आलस्य कर गया । कल करेंगे । मनुष्य का सबसे बडा शत्रु आलस्य है । जिस समय जो काम करना हो उसी समय उसे पूर्ण कर देना चाहिए । आलसी मनुष्य की प्रगति नहीं होती । दूसरे दिन उठकर वह तपेली माजने लगा तो दाग छूट नहीं रही थी वह बडा क्रोधित हुआ, लेकिन उसने क्रोधमें आकर तपेली को कूंच डाला, जो किसी काम लायक नहीं रही । दो पहर का समय था खूब भूख लगी थी, भोजन सामग्री तो मिल गया लेकिन बनावे किस में । गाँव में वर्तन मांगने गया, अब उसे बर्तन कौन देगा ? उसे बर्तन कोई नहीं दिया । पश्चाताप करके रोने लगा । हे भगवान यह मैने क्या कर दिया । अब मैं किसमें बनाऊ । अपने को धिक्कारने लगा । इससे क्या तपेली ठीक हो जायेगी इसे रोते हुए देखकर किसीने पूछा, उसने सभी आप बीती बता दी । सभी उसपर हंसने लगे और कहने लगे स्वयं तपेली तोड कर अब पश्चाताप कर रहा है ।

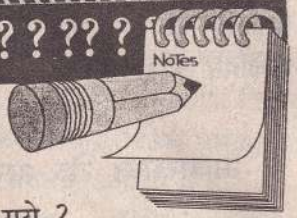
जेथी स्वारथ आपने जरीये रे,
सुणो साहेलियो ।
तेनी ऊपर क्रोध न करिए रे,
सुणो साहेलियो ।
लात दुझती गायनी खमिए रे,
सुणो साहेलियो ।
तेने तजिए तो दूध क्या जमिए रे,
सुणो साहेलियो ।
कोईनी साथे टूंकारे लडीए रे,
सुणो साहेलियो ।
एमां आपण हलको पड़ीए रे,
सुणो साहेलियो ।
सांखी चाले ते माणस मोटुं रे,
सुणो साहेलियो ।
दलपत कहे नथी खोटुं रे,
सुणो साहेलियो ।

केवल एक तपेली यदि इतनी उपयोगी हो सकती हो तो संप्रदाय में सत्संग किना उपयोगी हो सकता है । इस सत्संग में किसी को दोष को देख कर त्याग देना यह तो दूध देती गाय को त्यागने के बराबर है । इसी लिए वचनामृत में भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि - चाहे जैसा स्वभाव हो लेकिन वह हरिभक्त सेवा करता हो तो उसका दोष नहीं देखना । जिसे सत्संग में आगे आना है उसे अपने में दोष देखना और दूसरे में गुण देखना चाहिए । ऐसी जिसकी प्रकृति हो वह सत्संग में उत्तरोत्तर बढता जाता है । इसलिए भगवान के सभी छोटे-बडे भक्त वन्दनीय हैं ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु पी.पी. स्वामी (जेतलपुर गुरुकुल)

प्रश्न : १ मुकुन्द राय को नैष्ठिक ब्रह्मचारी होना था, तो वे प्रथमबार किसके पास गये ?

प्रश्न : २ नरसिंहभाई के द्वितीय विवाह को सभीने ना करदिया था तब वे अपने गुरु के पास गये, गुरु ने क्या कहा ? गुरु का क्या नाम था ?

प्रश्न : ३ निजात्मानं ब्रह्मरुपं देहत्रय विलक्षणम् ।
विभाव्यतेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।
इस श्लोक का उल्लेख श्रीहरिने किस शास्त्र में किया हैं ?

प्रश्न : ४ लोज में निलकंठ वर्णी को किस नाम से बुलाया जाता था ?

प्रश्न : ५ "सत्संग करने वाले को शूलीका दुःख कांटे से मिटता है" यह बात श्रीहरिने किस वचनामृत में कहा है ।

प्रश्न : ६ निष्कुलानंद स्वामी पहले क्या थे ? उन्होंने किस कीर्तन के किस पद में पूर्व की बात कही है ?

प्रश्न : ७ अपने सम्प्रदाय का क्या नाम है ?

अगस्त २००५ महीने के प्रश्नपेटी का सत्यउत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) शिक्षापत्री के १०८ वे श्लोंक में । (२) स.गु. गोपालनंद स्वामीने । (३) सं. १८३९ के साल में प्रभु की उम्र ३ वर्ष की थी । (४) वचनामृत के प्रथम के ६३ वें में नृसिंहानंद स्वामीने श्रीजी महाराज को गढडा में प्रश्न पूछा था । (५) जनूनी जीवो रे गोपी चन्दनी पुत्र ने पेर्योवैराग्यजी" कीर्तन की कडी है, जिसके रचयिता निष्कुलानंद स्वामी हैं । (६) कायाभाई से कुत्ते की पूछ दब गयी तब कायाभाईने कुत्ते का अपराध हुआ है यह जानकर दंडवत प्रणाम करने लगे, वे कायाभाई गोंडल तहसील के कमढिया गाँव के सिंधी मुसलमान थे । (७) १. मजाक में २. विवाह प्रसंग में ३. जीविका के लिए, ४. प्राण संकट में, ५. गाय संकट में हो, ६. ब्रह्माण के लिए, ७. हिंसा होती हो, ८. गुरु के लिए, ९. स्त्री के आगे, १०. स्वधर्म की रक्षा के लिए इन सभी के लिए पापदोष नहीं लगता हैं ।

१. श्री चंद्रिकाबेन, शोभना, जयेश (जीरागढ)
२. श्री वैशाली, नीता, श्रुति (जीरागढ)
३. श्री साकरबहन नटवरभाई पटेल (नांदोल)
४. श्री कंचन बहन तथा बाबुभाई, निलेश, शैलेष (रतनपुर-मूलीदेश)
५. श्री शोभनाबहन मनीषभाई परमार (राजकोट)
६. श्री शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
७. श्री नागजीभाई वी. पटेल (चांदलोडीया)
८. श्री पटेल कैलासबहन विष्णुभाई (नांदोल)
९. श्री पटेल अंजनाबहन मनुभाई (नांदोल)
१०. श्री अमृतलाल मोदी (सोजा)
११. जेतलपुर मंदिर के विद्यार्थी (जेतलपुर)
१२. श्री सोनी भगवानदास वेलजीभाई (मोरबी)

नोंट : उत्तर देने वाले लाइन वाले पेपर पर स्वक्ष अक्षर में लिखकर भेंजे तथा नाम स्पष्ट वांचा जा सके ऐसा लिखे ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में श्रावण वद-८ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को पूरे दिन दर्शन कर हरिभक्तों ने दिव्य लाभ लिया था । रात को श्री नरनारायणदेव के समक्ष उत्सवी मंडल ने उत्सव किया था । और सभा मंडप में कीर्तन-भक्ति की गयी थी । रात को १२-०० बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव की आरती धामधूमपूर्वक की गयी थी । जिसके दर्शन हजारो हरिभक्तों ने किए थे । इस अवशर पर पू. महंत स्वामी के प्रतिनिधि के रूप में कोठारी धर्मप्रकाशदास तथा शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजीके मार्गदर्शन से कोठार स्टाफ ने तथा संत-मंडल ने सुंदर आयोजन किया था । *- विनोद पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

श्रीहरि के दिव्य चरणो से अंकित अहमदाबाद के कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सांनिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से अषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ पर्यन्त भगवान को विविध प्रकार के हिंडोला में झुला कर हरिभक्तों को दर्शन कराये गए थे ।

श्रावण सुद-१ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सीद्धेश्वर महादेवजी का दूध तथा गंगाजल से अभिषेक कर बालस्वरूप कष्टभंजन देव की आरती उतारी थी । मंदिर में हरिकृष्ण महाराज को झुलाकर उत्सवी मंडल की सभा में दर्शनार्थ पधारे थे । हरिभक्त प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के दर्शन कर धन्य बने थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ महंत स्वामी निर्गुणदासजी तथा संत-मंडल पधारे थे । संध्या आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने उतारी थी । जिससे विशेष दर्शनलाभ प्राप्त हुआ था । इस अवशर पर महंत गुरुप्रसाददास तथा कोठारी आनंद स्वामी की प्रेरणा से कार्यक्रम सुंदर प्रकार से संपन्न हुआ । पूजारी देवकृष्णदासजी ने ठाकुरजी का नये-नये शृंगार कर दर्शन करवा कर हरिभक्तों को प्रसन्न किया ।

- कोठारी आनंद स्वामी

वाली (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति प्रतिष्ठा

दि. १५-६-२००५ को वाली के शिखर मंदिर में श्री नरनारायणदेव की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के करकमलों से हुई थी ।

यहाँ के महंत स्वामी निर्मळदासजी, स्वामी देवप्रसाददासजी, कोठारी हरिप्रसाददासजी तथा स्वामी घनश्यामजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव की मूर्ति के यजमान प.भ. दिवाळीबहेन विठ्ठलदास करशनदास पेपलिया परिवार (ऊंझा) रहे थे । और सिंहासन के यजमान वरजांगाराम सोनानजी माणी । वालीवाले रेमाभाई) रहे थे । वाली मंदिर में संवत १९८५ में राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराजश्री की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्रीने की थी । तब से वाली और मारवाड के सत्संग का और विस्तरण हुआ है । इस मंदिर का निर्माण कार्य अ.नि. स्वामी भक्तिनंदनदासजीके शिष्य अ.नि. स्वामी कृष्णस्वरूपदासजी ने करवाया था । मारवाड के सत्संग की महिमा भक्त चिंतामणी में १२० वें प्रकरण में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने गाया है ।

मोटा भक्त मरुदेशना,
वळी मोटा छे जेना मन संग कुसंगने ओळखी,
वळी थया हरि ना जन, लेश नही जेह देशमां
समझया सुधी नी रीत
तेवा देश मां उपजी जेणे करी हरि शुं प्रीत
वाली गामे वसे बहुजन ओझा
विरम भगत पावन द्विज
भक्तो गाम जोधावास मेघराज भक्त कवि

- भंवरलाल खेचाजी पुरोहीत, जोधावास

महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर

महेसाणा के निर्माणाधीन भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ठाकुरजी को विविध प्रकार के हिंडोले में झुलाया गया था । १५ अगस्त को राष्ट्रिय चिन्ह के हींडोला दर्शन करवाये गए थे । चातुर्मास में प्रत्येक एकादशी को महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी तथा महंत शा.स्वामी उत्तमप्रियदासजीने समूह महापूजा विधि करवा कर हरिभक्तों को लाभ देते है । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा दि. १-८-२००५ को बालकोकी सुलेखन स्पर्धा तथा दि. १४-८-२००५ को कीर्तन तथा देश भक्ति के गीत का आयोजन किया गया था । प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेता को इनाम दिया गया था । तथा आश्वासन इनाम भी दिए गए थे । इस प्रकार यहाँ महेसाणा तथा और कई गाँव के हरिभक्त दर्शन करके धन्य बने थे । *- नारायण स्वामी महंत, महेसाणा*

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में गुरुपुर्णिमा मनायी गयी

यहाँ के मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराजके सांनिध्य में गुरुपूर्णिमा को सभा में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की प्रतिमा सिंहासन पर रखकर संत-हरिभक्तो ने पूजन अर्चन कर आरती की थी । महंत अखिलेश्वरदासने धर्मवंशी आचार्य का महिमा बतायी थी । इस अवशर पर भंडारा का आयोजन किया गया था ।

- पूजारी सर्वेश्वरदास

दिल्ही मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपतू प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से अपने दिल्ली (गुजरात विहार-विकास मार्ग) श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान बाल स्वरूप घनश्याम माहाराज का पाटोत्सव-अभिषेक दि. १४-८-२००५ रविवार को सुबह ७-३० बजे यहाँ के महंत स्वामी देवप्रसाददासजी तथा विद्वान विप्र के हाथो शोडषोपचार विधि धामधुम से संपन्न हुआ था ।

जिसकी पूजा विधि में यजमान डॉ. उर्मिलाबहन, डॉ. त्रिलोकभाई, प.भ. शरदभाई जनकभाई टांक आदि हरिभक्तों

ने श्री हरिकृष्ण महाराज की पूजाविधि कर दिव्य लाभ लिया था ।

प्रासंगिक सभा में पू. महंत शा.स्वा. जगतप्रकाशदासजी (धोलका तथा शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी (नारायणघाट) ने बाल स्वरूप घनश्याम महाराज तथा उनके कुल श्री नरनारायणदेव पीठ के तीनो अपर स्वरूप की महिमा शास्त्रोक्त विधान से सुंदर प्रकार से समझाया था । छुट्टी का दिन होने के कारण अभिषेक, शृंगार तथा अन्नकूट का प्रसाद लेकर धन्य बने थे । इस प्रसंग में माधव स्वामी उत्तम स्वामी तथा कोठारी भूपतराय भगत ने उत्तम सेवा कर महाराज को प्रसन्न किया था ।

- जयंतीभाई एल. पटेल

अमदाबाद में घाटलोडिया विस्तार में श्री नरनारायणदेव ताबा के हरिमंदिर की खात विधि

घाटलोडिया-रन्नापार्क विस्तार में श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान हरिभक्त प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पिछले दश वर्षो से यहाँ एक शाला में नियमित सत्संग कर सत्संग को बढाने का अभियान चल रहा है । जिस में प.भ. सोमाभाई पटेल (गुलाबपुरा) प.भ. प्रविणभाई पटेल (वडु), प.भ. कांतिभाई, प.भ. नागरभाई पटेल प.भ. अमृतभाई पटेल, प.भ. मनुभाई पटेल, प.भ. प्रभुदासभाई आदि कई हरिभक्त मेहनत कर इस विस्तार में मंदिर बनाने का प्रयत्न कर रहे थे । जिसमें चार वर्ष पूर्व प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने यहाँ के १७५ घरो में पदार्पण कर हरिभक्तों के संकल्प को दृढ किया । और यहाँ मंदिर निर्माण हो ऐसा हरि के अपर स्वरूप ने संकल्प किया । थोडे समय में यहाँ सुंदर रमणीय निलकंठ महादेव के मंदिर के पास की जमीन पसंद की । निलकंठ महादेव के मंदिर के ताबा का संपूर्ण दस्तावेज कर प.पू. आचार्य महाराजश्री को खात मुहूर्त में पधारने की प्रार्थना की । दि. ८-८-२००५ सुबह ८-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से वेद-विधि से खात विधि संपन्न हुई थी । जिसमें यजमान श्री ने भी सुंदर सेवा कर पूजन का लाभ लिया था ।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी नारायणपुरा महंत शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी तथा स्वामी स्वयंप्रकाशदासजीने घाटलोडिया-चांदलोडिया-रन्नापार्क विस्तार के हरिभक्तों को इस मंदिर निर्माण में सहभागी बनने का अनुरोध कर मंदिर जल्द पूर्ण हो इसके लिए प्रार्थना की थी ।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि मंदिर निर्माण के पश्चात युवान मंदिर में आयेंगे जिससे व्यसन छूटेगा और संस्कार आयेंगे एसा कहकर सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का यह मंदिर जल्द पूर्ण करे और सत्संग का विस्तार हो ऐसी प्रार्थना की थी ।

सभा में खात मुहूर्त के यजमान, प.पू. महाराजश्री के पूजन के यजमान, आरती-भोजन के यजमान तथा मंदिर की कमिटी तथा दाताओने महाराजश्री का पूजन अर्चन कर आशीर्वाद प्राप्त किया था । प्रत्येक हरिभक्तों को प्रसाद दिया गया था । सभा संचालन प.भ. घनश्यामभाई एस. पटेल ने किया था । *- प्रो. शानाभाई तथा प्रहलादभाई पटेल*

वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडगनर में श्री घनश्याम महाराज की छत्रछाया में महंत स्वामी हरिसेवादासजी के प्रेरणा से विविध प्रकार के हींडोला में श्रीहरिकृष्ण महाराज को झुलाया गया था । शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी सुबह-शाम श्रीमद् सत्संगीजीवन का कथामृत पान करवाते है । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा प्रत्येक रविवार तथा एकादशी को सभा-कीर्तन द्वारा सत्संग वृद्धि का कार्यक्रम करते है चातुर्मास की सार्थकता प्राप्त क रते है ।

- शा. नारायणवल्लभदासजी, वडनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से १४ वाँ वार्षिक दिवस श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने समूह में कथा वार्ता भजन कीर्तन तथा हरि स्मरण के साथ धामधूम पूर्वक मनाया गया था । प.पू. लालजी महाराजश्री का ८वाँ प्राकट्योत्सव मंदिर में धुन-भजन कीर्तन कर मना कर सभी को प्रसाद दे कर धामधूम से मनाया गया । *- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, लुणावाडा*

माधवगढ (प्रांतीज देश)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण मासमें हरिभक्तों ने श्री हरिकृष्ण महाराज को छोटा किन्तु सुंदर शोभायमान हींडोला बना कर झुलाया था । तलोद बाजार के हरिभक्तों ने भी इस अवसर पर सेवा कर सुंदर लाभ लिया था । *- भलाभाई*

श्री स्वामिनारायण मंदिर चलोडा (धोलका देश)

श्रीहरि समकालीन जीतबा के चलोडा स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पूर्ण कृपा से तथा धोलका मंदिर के महंत शा.स्वा. जगतप्रकाशासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से बहनो तथा भाईयोने ठाकुरजी को विविध हिंडोले पर झुलाए थे । रात को हरिभक्तों ने उत्सव के पद गाये थे । जन्माष्टमी को धोलका महंत संत मंडल के साथ जन्मोत्सव की आरती करने पधारे थे ।

- जयंतीभाई पटेल

मीठाखडी (अहमदाबाद) श्री स्वामिनारायण मंदिर में दशम स्कंध पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के मार्गदर्शन से तथा शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ श्रावण सुद-७ से श्रावण सुद-१३ पर्यन्त रात को ९ से ११ के दौरान शा. स्वामी ब्रह्मविहारीदासने श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकी कथा कर हरिभक्तोंको हरिरस पान कराया था । अंत में पूर्णाहुति पर नारायणघाट मंदिर महंत घनश्याम स्वामी, माणसा महंत इत्यादि संत उपस्थित रहे थे । शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासने इस अवसर पर उद्बोधन किया था । *- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल मीठाखडी*

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क

यहाँ के मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से दि. ११-८-०५ से दि. १९-८-०५ पर्यन्त श्री निष्कुलानंद काव्य की (धीरज आख्यान रात्री पारायण) पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुळ) के वक्तापद पर हुआ । जिसका लाभ लेने बडी संख्या में हरिभक्त

उपस्थित थे । इस अवशर पर कक्षा १ से १२ वेंतक अच्छे प्रतिशत उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी से प.पू. लालजी महाराजश्री के हस्थों से शिल्ड-मोमेन्ट से सम्मानित किए गये । दि. २३-७-०५ से २१-८-०५ पर्यन्त मंदिर में भव्य हिंडोला दर्शन कराए गये थे । इस अवशर पर समस्त धर्मवंशी धर्मकुल परिवारने दर्शन कर हरिभक्तों को आशीर्वाद दिए थे । हजारो हरिभक्तों ने हिंडोला दर्शन कर भाव-विभोर हो गए थे ।

- धनंजय ठक्कर, श्री न.ना.दे.यु. मंडल

सेटेलाईट-वस्त्रापुर विस्तार में विशेष भक्ति संगीत कार्यक्रम

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से अमदाबाद के सेटेलाइट-वस्त्रापुर विस्तार में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराश्री की शुभ उपस्थिति में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा 'भक्ति संगीत' का भव्य आयोजन किया गया है ।

दि. २५-९-२००५ रविवार
शाम ६-०० से ८-३० तक
स्थल : सप्तपदी होल,
जोधपुर चार रस्ता के पास,
गोल्डन कोईन कोम्पलेक्ष में,
सेटेलाइट, अमदाबाद

सेटेलाइट-वस्त्रापुर तथा नवरगंपुरा के हरिभक्तों को उपस्थति रहने का अनुरोध है ।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा के बार में

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संचालति श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा दि. १८-१२-२००५ को रविवार को सभी केन्द्रो पर ली जायेगी । प्रत्येक केन्द्र संचालक परीक्षार्थी का लिस्ट जल्द भेज कर यहाँ से फोर्म तथा सप्लीमेन्ट्री प्राप्त कल ले ।

संचालक श्री,
श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा विभाग,
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदाबाद
(समय : सुबह ८ से १०)

अहमदाबाद नारायणापुरा डी.के. पटेल होल में पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रंथ का पारायण सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से नारायणपुरा के विशाल डी.के. पटेल होल में पूज्य शा.स्वामी पुस्त्रोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) के वक्ता पद पर स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित पुस्त्रोत्तमप्रकाश ग्रंथ का सप्ताह पारायण श्रावण शुक्ल-१ से सप्तमी पर्यन्त संगीतमय वातावणर में कथा का दिव्य लाभ (रात्रि में ८-३० से ११ बजे तक प्रतिदिन १२०० जितने भावुक हरिभक्तों ने लिया । विगत दो वर्ष से यहाँ श्रावण मास में कथा का आयोजन किया जाता है । अब प्रतिवर्ष इसी स्थल पर इसी समय में कथा का आयोजन किया जायेगा । श्रीहरि के तीनों अपर स्वरूपो की प्रसन्नता तथा आज्ञा से सत्संग का खूब विकास हो रहा है ।

- शा. विश्वप्रकाशदास

जेतलपुर धाम में श्रावण मास में श्रीमद् भागवत कथा पारायण

पवित्र श्रावण मास में जेतलपुर धाम में सर्वोपरि श्री रेवती बलदेव, हरिकृष्ण महाराज के शुभ सांनिध्य में महंत शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा महंत के.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्रीमद् भागवत शास्त्र की कथा शास्त्री स्वामी हरिवल्लभदासजी (कोठारी महेसाणा मंदिर के वक्तापद पर संगीत के सुमधुर स्वर में हुई थी । जेतलपुर तथा अगलबगल के भावुक भक्तों ने कथा का लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाया था ।

- शास्त्री भक्तिनंदनदास

धोलका मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव सम्पन्न

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के समस्त धर्मकुल परिवार की कृपा से श्रावण शुक्ल-८ मीं जन्माष्टमी को श्री मुरलीमनोहर हरिकृष्ण महाराज के सामने सुन्दर झूला बनाकर झुला गया था । इस समय मंदिर की शोभा अवर्णनीय तथा अद्भूत लग रही थी । रात्रि में ८ से १२ बजे तक उत्सवी मंडल द्वारा सुन्दर उत्सव का आयोजन किया गया था । दोने महंत स्वामी जगतप्रकाशदासजी एवं विष्णुप्रसाददासजा की प्रेरणा से श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । धोलका के हजारो भावुक हरिभक्तों ने दर्शन का दिव्य लाभ लिया था । धोलका के वकील हरिभक्त तथा नरनारायण युवक मंडल एवं मंदिर के संत मंडल ने इस प्रसंग में सेवा का अतिभार लेकर प्रसंशनीय कार्य किया था ।

- राकेशभाई युवक मंडल

दहेगाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में झूलोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाम में श्रावण मास में ठाकुरजी के समक्ष नानाविध झूला का उत्सव किया गया था । जिसमें यहा प्रभु को झुलाया गया था । इस प्रसंग पर कोठारी अरविंदभाई, फूलवदन, ब्रह्मभट्ट, राठोड खन्नाभाई तथा हसमुखभाई पटेल इत्यादि हरिभक्तों ने सेवा करके प्रभु को प्रसन्न किया था ।

- हर्षदकाका पटेल स्टो रकीपर

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

मूली मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव परंपरागत ढंग से मनाया गया

झालावाड के हार्द समान स.गु ब्रह्मानंद स्वामी के मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में तथा नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव बडे धूमधाम से मनाया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी धर्मकुल के साथ विदेश की धर्मयात्रा में होने पर भी झालावाड हालार देश के संत हरिभक्तों के हृदय में धर्मकुल का प्रत्यक्ष जैसी दर्शन सुखानु भूति हुई । हजारों भक्तों ने रात्रि १२-०० बजे जन्मोत्सव के दर्शन का लाभ लेकर धन्य का अनुभव किया । महंत स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी तथा स.गु. स्वामी बालकृष्णदासजी की प्रेरणा से महंत स्वामी नरेन्द्रप्रसाददासजी, कोठारी जयप्रकाशदासजी, अनिरुद्ध स्वामी, चंदु भगत तथा भरत भगतने सुंदर सेवा का आयोजन किया था ।

- शा. लक्ष्मीनारायणदासजी चराडवा

विदेश सत्संग वृत्तान्त

मिडवेस्ट I.S.S.O. श्री स्वामिनारायण मंदिर का ७वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

सर्वावतारी श्रीहरि की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से शिकागो मंदिर का ७वाँ पाटोत्सव सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर ता. २७-७-०५ से ता. ३०-७-०५ तक श्री सत्संगि भूषण पारायण शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ इसके यजमान प.भ. जोईताराम आत्माराम पटेल तथा प.भ. जसवंत आत्माराम पटेल (मोखासण) वासीने अपनी माताश्री अंबा बहन की जीवन चर्या के निमित्ते धर्मलाभ लिया था। सायंकाल कथा में घनश्याम महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। हरियाग की पूजन विधि श्री दिनेशभाई जोशी ने की। उसी दिन अपने भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी का जन्मोत्व वहाँ के छोटे बच्चोने तथा युवान हरिभक्तों ने धूम धाम से मनाया था। ता. ३१-७-०५ के दिन ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक वेदविधि से किया गया। अभिषेक, अन्नकूट दर्शन का लाभ शिकागो तथा अन्य स्टेट के हरिभक्तों ने लिया।

प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, पुजारी स्वामी तथा श्री विवेद ब्रह्मभट्ट ने प्रसंगोचित प्रवचन किया। बहनो की अन्नकूट सामग्री की सेवा अद्‌भुत थी आभार विधि प्रमुख श्री जगदीशभाईने किया। *- धीरुभाई भुंगणीया*

ह्युस्टन (टेक्सास I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावी आचार्य व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत मुनि स्वामी तथा ज्ञान स्वामी की प्रेरणा से ता. २४-७-०५ रविवार को गुरुपूर्णिमा का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का हरि भक्तोंने बडी श्रद्धा से पूजन अर्चन किया।

ता. ३०-७-०५ को प.पू. लालजी महाराजश्री के पाकट्य उत्सव को स्वामी ज्ञानप्रकाशदासजी की प्रेरणा से युवक मंडल ने मंदिर को सजाकर धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया था। युवा हरिभक्तों ने केक काटकर लालजी महाराजश्री का जन्मोत्सव मनाया था।

विविध प्रकार से झूलों को सजाकर भगवान को झुलाया गया था। जिस का दर्शन करके हरिभक्त तृप्ति का अनुभव किये थे। प.पू. लालजी महाराज के जन्मोत्सव प्रंसग पर FUNDHV प्रसंग मनाने के लिए मुनि स्वामी, ज्ञान प्रकाश स्वामी, कारोबारी सभ्य तथा श्री न.ना.देव युवक मंडल ने खूब श्रद्धा भावना से सेवा करके श्रीहरि को प्रसन्न किया था।- *रमेशभाई टी. पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O. ओस्ट्रेलिया)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में नीचे प्रमाणानुसार सभा का आयोजन किया गया था।

ता. ११-७-०५ प.भ. सुरेसभाई पटेल तथा वर्षाबहन पटेल की तरफ से, ता. ३१-७-०५ एकादशी की सभा प.भ. विनोदभाई केराई की तरफ से, जिसमें अजलेशभाईने एकादशी के ऊपर सुंदर प्रवचन किया। ता. ६-८-०५ को श्री मद् भागवत गीतापाठ पारायण श्री अमृतभाई के वक्तापद पर किया गया था। ता. ३१-७-०५ के दिन ठाकुरजी को सुन्दर झूले में झुलाया गया था। ता. ७-८-०५ तथा १४-८-०५ को भी विविध प्रकार से सजाकर झूले में महाप्रभु को झुलाने का लाभ हरिभक्तों ने लिया था। प्रत्येक सभा में सर्वोपरि श्रीहरि के मूल सिद्धान्त तथा आचार्य परंपरा के माहात्म्य की कथा नित्य नियम इत्यादि हरिभक्तों द्वारा किया गया था।

- तेजस वी. पटेल

वाशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

बुवी (मेरीलेन्ड) ता. ३०-७-०५ शनिवार के दिन सायंकाल ३-०० बजे सभा में कथा-वार्ता-धुनि-भजन-नित्य-नियम समूह में हरिभक्तों ने किया। हरिभक्तों की संख्या खूब थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुंदर चल रहा है। प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज के प्राकट्योत्सव के प्रसंग पर उन्ही की तस्वीर रखकर आरती पूजा की गयी थी। सभी ने इस पूजन-अर्चन का लाभ लेकर धन्यताका अनुभव किया था। *- कनुभाई पटेल*

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर हवेली में सेवा पूजा करती सांख्ययोगी रंजनबा गुरुसांख्ययोगी मणीबा ता. १७-८-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासी हुई है।

अहमदाबाद : प.भ. त्रिभोवनभाई जेठाभाई पटेल (मेथाणवाला) ता. २५-७-०५ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अहमदाबाद : मथुरा बहन रतीलाल ठक्कर (पाटडीवाला) ता. २०-८-०५ के दिन श्रीजी महाराजका स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई हैं।

बावणा : प.भ. अवजीभाई की माताजी कमझुबा ता. १४-८-०५ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई हैं।

वहेलाल : अ.सौ. कोकिलाबहेन रमेशभाई पटेल दि. २५-८-०५ के दिन श्रीहरि का स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई हैं।



श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया झूले में विराजमान श्रीहरिकृष्ण महाराज की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में सिद्धेश्वर महादेवका अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



जीवराजपार्क मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देते हुए ।

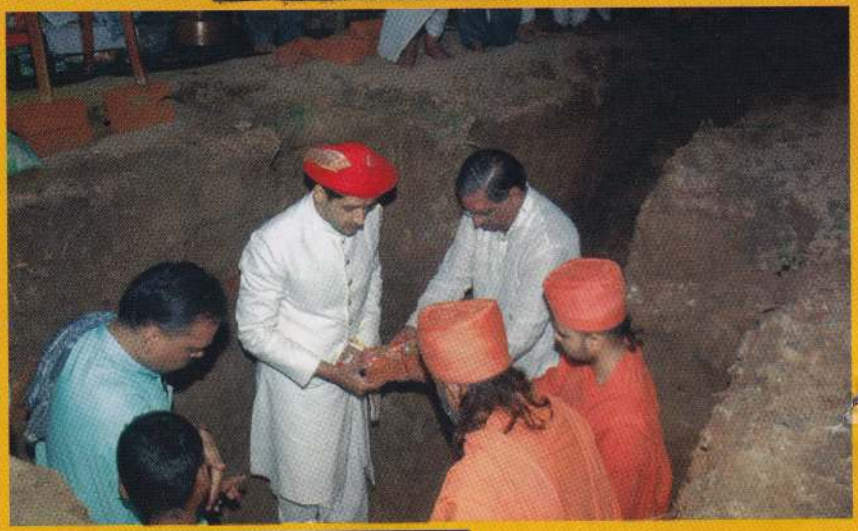


श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में उत्सवी मंडल की सभा में विराजमान होकर दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।





श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में श्रावण मास में समूह महापूजा का लाभ लेते हुए भाई एवं बहनो ।



घाटलोडिया अहमदाबाद में श्री स्वामिनारायण मंदिर का खातपूजन करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा साथ में लाभ लेते हुए यजमान श्री ।





श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद हवेली में पू. श्री राजा (लालीराजा) के जन्मोत्सव प्रसंग पर पूज्य लालजी महाराजश्री पू. श्री राजा के साथ केक काटते हुए जन्मोत्सव मना रहे हैं ।

Praful Kharsani